प्रेम पत्र

पूज्य यशवन्त राव चव्हाण जी,

सादर प्रणाम।

यह ठीक है कि आप भारतवर्ष के प्रधानमंत्री न बन सके परन्तु इससे आपकी क्षमता और अक्ल पर कोई लांछन नहीं आता क्योंकि आप देश के न केवल विदेश मंत्री रहे बल्कि रक्षामंत्री भी रहे और वित्तमंत्री भी बने। लिहाज़ा देश की सत्ता में आपका बड़े से बड़ा हिस्सा रहा इसलिये मैं आपकी बहुत इज्जत करता हूँ। मुझे अफसोस है कि जब इन्दिरा गांधी प्रधान मंत्री न रहीं और आपको केबिनेट का मंत्री न बना पाईं तब भी उन्होंने आपको विरोधी दल का लीडर चुनवाकर केबिनेट स्तर की सारी सहूलियतें आपकी सेवा में पेश कीं। जब इससे भी आपका मन न भरा तब आपने कंग्रेस पार्टी के दो टुकड़े करा दिये ताकि इन्दिरा गांधी राजनीति से हट जाये।

मुझे अफसोस है इस प्रोग्राम में आपकी दाल ज्यादा देर न गल सकी क्योंकि चिकमगलूर में नये-नये नारे लगने शुरु हो गये।

"चिकमगलूर भाई चिकमगलूर
एक शेरनी सौ लंगूर।"

अब वह शेरनी पार्लियामेन्ट में आ पहुँची है और सुलह का बिगुल बजा रही है। यदि इस समय आप समय की सच्चाई को समझ लें तो आपका और देश का कल्याण हो सकता है। चाहे जनता पार्टी का कल्याण हो या न हो।

इसलिये आपकी सेवा में यह सुझाव देना चाहता हूँ कि कुछ दिनों के लिये आप अपने आपको केवल महाराष्ट्र का नेता न समझकर कांग्रेस की एकता और देश का ख्याल करें। यह कल्याण तभी होगा जब आप प्रेम धवन का यह गाना गुनगुनायेंगे—

"यह जिन्दगी का राज है, मिलके चलो, मिलके चलो।"

आपका

चिल्ली

मुख्य पृष्ठ पर

चलते-चलते रुक जाते हैं
बड़े-बड़े सब झुक जाते हैं
क्रिकेट्री है एक ऐसा जादू
सुनते बाबू मियां और साधू।
इस रोग ने सबको ऐसा जकड़ा
हाथी को भी इस रोग ने पकड़ा
आऊट हुआ जब कोई खिलाड़ी
कहता हाथी तू भी सुन ले याड़ी॥

अंक [illegible], ३० नवम्बर से ६ दिसम्बर १६७८ तक
वर्ष : १४

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे
छमाहीः २५ रु०
वार्षिकः ४८ रु०
द्विवार्षिकः ९५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिए पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०

ब्रजमोहन महाजन "खुश', इन्दौर

प्र० : हम जिनको समझते रहे थे दोस्ती के फूल।
हाए, वे चुभने लगे हैं ग्राज कांटों की तरह।

उ० : दिल पे रखकर हाथ, पहले दोष ग्रपने ढूंढ़िये।
खुद-ब-खुद मिल जाए मिस्टर ग्रापको इसका जवाब।

मु० सलीम 'खामोश', हजारी बाग

प्र० : शादी के लिए कैसी लड़की ठीक रहेगी काका ?

उ० : लफंगों का नहीं खटका. उचंगों का नहीं खतरा,
वो खुशकिस्मत हैं शौहर, जिनकी बीवी स्याह काली है।

राजू अग्रवाल, गोरखपुर

प्र० : काका जी, ग्राप सिगरेट किस ब्रांड की पीते हैं ?

उ० : खुल्ल-खुल्ल खांसी उठी, लगा बिगड़ने पेट।
तबसे हमने छोड़ दीं, सभी ब्रांड सिगरेट ॥

विनय भाटिया, करनाल

प्र० : प्रश्नोत्तर देने में ग्रापका दिमाग इतना तेज क्यों है काका ?

उ० : काया पर ग्रालस्य का, मत लगने दो दाग।
घिसते रहिए नित्य-प्रति, पैना होय दिमाग ॥

प्रदीप रंगीला 'गप्पी', दिल्ली-३५

प्र० : 'जब प्यार किया तो डरना क्या' फिर भी छिपकर प्यार क्यों करते हैं ?

उ० : छिप-छिपके जो मिलता रहे, वो यार नहीं है।
जिस प्यार में हो डर छिपा, वो प्यार नहीं है ॥

दिलीप सहानी, इन्दौर (म० प्र०)

प्र० : रामराज्य में दूध, कृष्ण राज्य में मक्खन, इंदिरा राज्य में नसबन्दी, तो देसाई राज्य में ?

उ० : राम-कृष्ण के राज्य में, दधि मक्खन की छूट,
कांग्रेस में लूट थी, जनता में है फूट।

सैय्यद अब्दुल जब्बार, बीकानेर

प्र० : सुना है, काकीजी ग्रापसे उम्र में बहुत बड़ी हैं काकाजी ?

उ० : उम्र की बड़ी हों वे, ग्रथवा कुछ कम्मी,
जवानी में पत्नी थीं, बुढ़ापे में मम्मी।

मनोहर तोहान, जालन्धर

प्र० : 'दीवाना' में ग्रापके उत्तर हमको लव-लैटर्स से क्यों लगते हैं ?

उ० : देखो बुक स्टॉल पर, तब हो तुमको हर्ष,
काका-काकी के वहाँ, पढ़िए लव-लैटर्स।

रमेश कुकरेजा, इन्दौर

प्र० : गरीबों का गला महंगाई दबा रही है, तो ग्रमी

उ० : दीन-दुःखी जन गा रहे, महंगाई के राग,
सेठों का दुश्मन यहाँ, इन्कम-टैक्स विभाग।

विनोद अरोड़ा, पानीपत

प्र० : जब कोई लड़की, किसी लड़के से मुहब्बत करन
तो लड़का ठुकरा क्यों देता है ?

उ० : लड़की को कुछ दोष क्यों, देते इसमें ग्राप,
हैं दहेज के लालची, लड़के के माँ-बाप।

के० पी० अरोड़ा, काशीपुर (नैनीताल)

प्र० : ग्रौरतें ग्रपनी सुन्दरता की प्रशंसा सुनकर खुश ह
मर्द ?

उ० : सौन्दर्य की प्रशंसा सुनकर बीबी धन्न,
मर्द-मियाँ मर्दानगी सुनकर होएं प्रसन्न।

बालकृष्ण 'कला', दुलियाजान (आसाम)

प्र० : ग्रापके कारतूसों पर प्रतिबंध लग जाए तो ?

उ० : दीवानों का जब तलक, 'दीवाना' से मेल,
'काका' बन्द नहीं करें, कारतूस की रेल।

कुलदीप सिंह, रूपाल बरनाला

प्र० : इश्क करने से पहले, क्या सोचना चाहिए ?

उ० : करलें ग्रपनी खोपड़ी, प्रेमीजी मजबूत,
ताकि सह सकें प्रेम से, चप्पल, सैंडल, जूत।

देवकुमार 'राकेश' बांद्रा-बम्बई

प्र० : इन्दिरा गाँधी की जीत पर ग्रापकी प्रतिक्रिया ?

उ० : चिकमगलूर चुनाव में चकित हुए लगूर
तोड़ ले गई लोमड़ी, हज्जारों अंगूर
हज्जारों अंगूर, रात ग्रौ दिन कोशिश की
फेल हो गई सारी एक्टिंग फर्नांडिश की
पहुंचेगी जब कांग्रेस (ग्राई) की ग्रम्मा
संसद में तब देखेंगे हम टुम्मक टुम्मा

केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

काका के कारत
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफ
नई दिल्ली-११०००

ईट
पंजा
पा थी
शिकार
रिकार्ड

लखपति कैसे बनें ? स्माल स्केल इंडस्ट्रीज

निर्माता प्रकाश मेहरा का एक और निर्माण—अब तक वह इससे पहले भी कई इसी प्रकार के फार्मूलों से भरपूर फिल्में बना कर दर्शकों की पाकेटें लूट चुके हैं। यह फिल्म चुकन्दर नाम के एक आदमी की कहानी है, जिसका मुकद्दर सचमुच ही चुकन्दर था। खैर मुकद्दर के चुकन्दर बांड किस्मत की कहानी आगे बतायेंगे—पहले पात्रों का परिचय।

अमिताप बचपन—चुकन्दर
विनोद खाना—विचाल
रेखा—मोहरा बाई
राखी—देर कर दी
इसके अतिरिक्त आमज
डा० श्रीराम बेलागू, रणची

मुकद्दर का चुकन्दर

पॉकेट मार
प्रोडक्शन लिमिटिड

PMP
PRAKASH MEHRA PRODUCTIONS

संगीत—लक्ष्मी कंद प्यारे दाल

सिनेमा प्रकोप

चुकन्दर लावारिस पैदा हुआ ! उसके मां-बाप का पता बहुत कोशिश करने पर भी सलीम जावेद को भी नहीं लगा। कुछ लोगों का कहना था कि वह बत्तख के अंडे से पैदा हुआ था। कुछ जानकार सूत्रों के अनुसार एक किसान जब चुकन्दर बोने के लिये खेत खोद रहा था तो उस समय जमीन में एक घड़े में मिला। उसने उसका नाम ही चुकन्दर रख कर सड़क पर छोड़ दिया। बचपन उसका घर-घर भांडे मांजने में बीता। वह बड़ा हुआ तो उसे एक ही लग्न थी कि अमीर आदमी बने। एक दिन उसने पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार दिल्ली से लखपति कैसे बनें पुस्तक वी. पी. पी. द्वारा मंगा कर पढ़ी। पुस्तक पढ़ते ही वह लखपति बन गया। अमीर बनते ही वह रोज शराब पीने लगा क्योंकि उसे मोरार जी के फार्मूले में विश्वास नहीं था।

लखपति कैसे बनें
स्माल स्केल इंडस्ट्रीज

VOTE 69

वह याद किया करता जब बचपन में उसे एक अमीर के घर से चोरी के शक में नौकरी से दिया गया था। उस घर में एक लड़की थी जो उससे बहुत सहानुभूति रखती थी। वह नशे में उसे याद करने की कोशिश करता लेकिन याददाश्त के टी० वी० में कुछ खराबी की पिक्चर क्लीयर नहीं आ रही थी। इसका कारण यह भी हो सकता है कि भांडे मांजने उस समय की याददाश्त में राख उड़ती रही हो जिससे याददाश्त के स्क्रीन पर धुंधलाहट हो। एक दिन चुकन्दर बार क्लब गया। वहां उसने विचाल को अकेले २० गुंडों को ाते देखा। चुकन्दर को लगा कि शराब पीने की बजाय यह मार-पीट वाला धंधा ठीक है। शायद इससे काम बन जाये।

क्योंकि आपने देखा होगा कि प्रायः टी० वी० पर जब पिक्चर साफ न आ रही तो तो मुक्का मारने पर स्क्रीन पर इमेज ठीक हो जाती है। मारपीट में लात, मुक्के खाने से शायद चुकन्दर के याददाश्त की टी० वी० स्क्रीन भी साफ हो जाये। बहरहाल एक दिन चुकन्दर बार क्लब पहुँचा तो देखता क्या है कि विचाल के कंधे पर एक मच्छर बैठा है। मच्छर गर्दन काटने की योजना बनाने में मगन था। चुकन्दर ने मक्खीमार स्वैप से एक ही बार में मच्छर का काम तमाम कर दिया। अगर मच्छर ने काट खाया होता तो विचाल को एनसेफेलाइट हो गया होता। इस घटना के बाद दोनों बहुत गहरे दोस्त हो गये।

PLAT!

चुकन्दर के बारे में और तो सब कुछ हमने बता दिया केवल एक बात बताना भूल गये। वह यह कि उसके शुगलों में मोहराबाई के नृत्य महल में जाकर दिन को मोहरा बाई का नृत्य देखना भी था। भारत के टी० वी० स्टेशनों से दिन को टी० वी० प्रोग्राम नहीं आते। उसी लाइन पर चुकन्दर के दिमाग का याददाश्त का चैनल दिन को खाली रहता था जिसे भरने के लिए मोहराबाई का सहारा उसे लेना पड़ता था। एक उससे भी बड़ा कारण यह था कि चुकन्दर के वास्तविक जीवन में मोहराबाई बनी रेखा से रोमांस भी चल रहा था। शूटिंग मिलने का एकमात्र बहाना था और फिल्म में डांसर के सिवा और कोई रोल खाली नहीं था लिहाजा दोनों ने इसी रोल से संतोष कर लिया। वर्ना ऐसे रोलों के लिये जयश्री टी०, हैलन तथा पद्मा खन्ना कहां गये थे ?
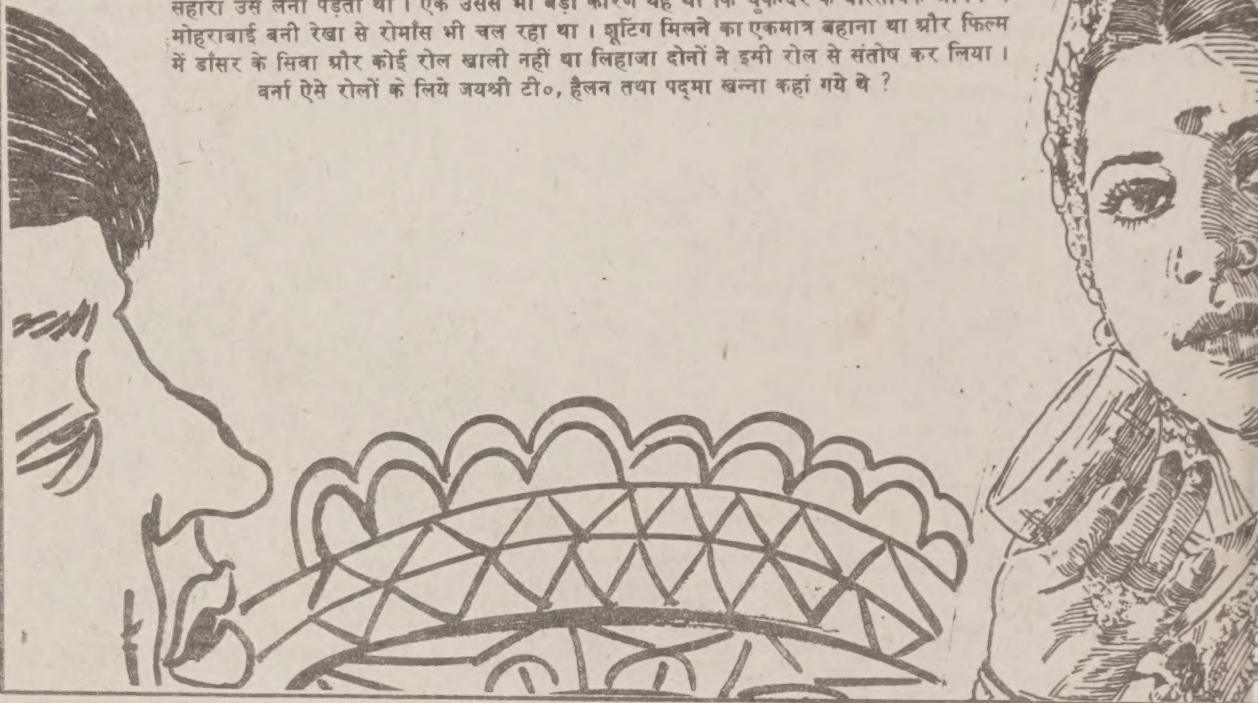
बेचारे चुकन्दर को यह पता नहीं था कि जिस अमीर घर की लड़की की याद में वह अपने दिम
भरे चुकन्दर के रस में हिलोरें पैदा करने की कोशिश कर रहा था। वास्तव में उसी घर के मा
के दफ्तर में उसका दोस्त विचाल काम करता है और उस लड़की तथा विचाल में रोमांस जड़
चुका है और दोनों की शादी होने वाली है। यहां बेचारा चुकन्दर जरा लेट पहुंचा, जिसके मु
में चुकन्दर हो उसे टमाटर कैसे मिल सकते हैं। चुकन्दर को इस बात से बहुत बड़ा धक्का ल
इतना बड़ा धक्का कि सीधा मोहराबाई के ड्राइंग रूम में ही ब्रेक लगे।
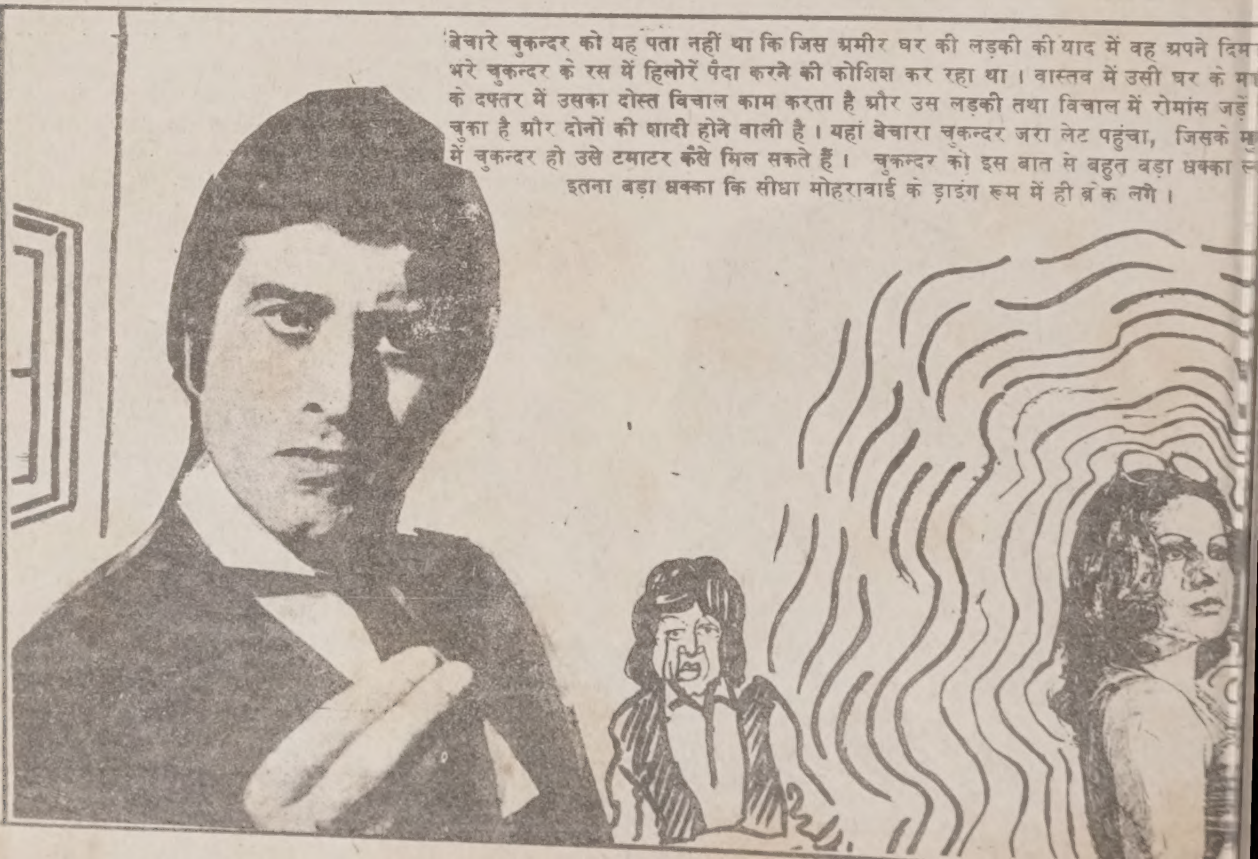
लेकिन मोहराबाई के पास पहुंचने पर उसे एक ग्रौर जबरदस्त धक्का लगा। धक्के का थ्रस्ट उसी हार्सपावर का था जितने का थ्रस्ट भारत द्वारा नये खरीदे जाने वाले दूर मारक युद्ध विमान जैगुआर का होगा। चुकन्दर ने किसी तरह स्वयं को संभाल लिया। चुकन्दर छाप किस्मत के कारण उसे इतने धक्के लगे थे कि उसके शरीर ने धक्कों के फारवर्ड थ्रस्ट को कैंसल करने के लिये बैकवर्ड थ्रस्ट का विकास कर लिया था। मोहराबाई मौत के दरवाजे पर खड़ी थी। किसी ने उसे जहर दिया था। मरते-मरते मोहराबाई ने उसे बता दिया कि उसे पान में मिला कर जहर देने वाली एक लड़की थी। उस लड़की ने ग्रपना नाम जया भादुड़ी बताया था। चुकन्दर के सामने एक समस्या थी कि मोहराबाई भी नहीं रही, ग्रब वह क्या करेगा ? दिन काटने के लिये किस चीज का सहारा ले तभी उसे क्रिकेट टैस्ट मैच का ध्यान ग्राया। समय काटने का सबसे ग्रच्छा साधन।

एक मोटा सा सेठ भी मोहराबाई का चाहने वाला था। जब उसे भी पता लगा कि मोहराबाई मर चुकी है तो उसके दिमाग में भी पहला ख्याल टैस्ट मैच देखने का हुग्रा। दोनों लगभग एक साथ स्टेडियम पहुँचे। सभी टिकटें बिक चुकी थीं। केवल एक ग्रादमी रणचीट के पास ब्लैक में बेचने के लिये एक टिकट थी। दोनों एक साथ उस एकमात्र टिकट पर झपट पड़े। छीना झपटी के बाद हाथापाई की नौबत ग्रा गई, दोनों में खूब मार-पिटाई हुई ग्रौर अंत में दोनों बेहोश होकर गिर पड़े इसी बीच पुलिस वहां पहुँची ग्रौर टिकट ब्लैक करने वाले को पकड़ कर ले गयी। होश में ग्राने पर दोनों ने टिकट न पा सकने के गम में एक साथ जमना जी में छलांग मारकर ग्रात्महत्या कर ली।

THE END

नया धारावाहिक उपन्यास

सुबह का तारा

लेखक—संगीता

बूंदों की खड़खड़ाहट बन्द हो गयी। पथरीली धरती ने चटकना बंद कर दिया और सन्नाटा गहरा होता गया। इतना गहरा कि वह केवल अपने दिल की धड़कन ही सुन पा रहा था। उन धड़कनों को, जो बहुत जल्द बंद हो जाने वाली थीं।

मौत, जो आने वाली थी। दबे पांव नहीं बल्कि घोषणा करके बीतने वाले हर पल को गुदगुदाकर, छेड़कर, जोर-शोर से आने वाली मौत जिसके स्वागत के लिए वह तैयार था। आज न बेड़ियां थीं, न जंजीरें। न संतरी के लहजे में वह कड़वाहट थी। आज तो उसने जो मांगा था, मिला था।

और अब नहा-धोकर कपड़े बदलने के बाद उसने गीता खोल ली थी और सिर झुकाकर धीरे-धीरे पढ़ रहा था। सन्नाटे में उसकी आवाज गूंज रही थी। हल्की रोशनी में उसका चेहरा एक-एक शब्द, एक-एक अक्षर को इस तरह देख रहा था कि वरदान और कृपा उसके मन की सारी कलुषता को धो डाले।

'और वह सर्वज्ञाता है—कृपालु है—क्षमाशील है।'

उसकी आंखों से आंसू की एक बूंद चू पड़ी।

जल्दी से उसने आंसू पोंछा। गीता को चूमकर माथे से लगाया, बन्द किया। एक ठंडी सांस ली और मुस्करा उठा।

दूर कहीं बारह का घंटा बजा।

बस चार घण्टे और पैंतालीस मिनट और बाकी रह गये हैं, फिर मुझे फांसी दे दी जायेगी। मैं एक तख्ते पर खड़ा किया जाऊंगा। मेरा चेहरा ढक जायेगा। फिर लोहे की बनी हुई मौत की मूर्ति नाचेगी। फंदा कसता जायगा। लकड़ी का तख्ता अलग हो जायेगा। और फिर जब सुबह का तारा झिलमिलायेगा तथा रात के अन्त में चिराग फड़कने लगेगा और सुबह की पूजा करने के बाद पुजारी मन्दिर से निकलेंगे और मन्दिर की घंटियां खामोश हो जायेंगी। और जब गंगा की खामोश लहरों का मौन भंग होगा, तब मेरी जिन्दगी की धुंध छंट जायेगी। बस शरीर में इस तरह हल्का-सा कम्पन होगा, जैसे खिड़की खुलने के बाद उसके नर्म झोंकों से शयन-कक्ष के पर्दे हिलकर रह जाते हैं।

मौत···!

और कितनी दिलचस्प मौत होगी। एक ऐसी मौत, जिस पर न कोई आंसू बहाएगा, न कविता लिखेगा! न कोई शोकभरा गीत गूंजेगा।

मधु रोती, रंजन रोता! लेकिन अब तो वह भी न रो सकेंगे। क्या वे मरने वाले की वसीयत का भी सम्मान न करेंगे?

वह मुस्करा दिया। सलाखों के पास आकर उसने संतरी से कहा—

'क्या सो गये भाई?'

'नहीं!' संतरी की आवाज सुनाई दी। ऐसी आवाज, जो आंसुओं से भीगी हुई थी, डूबी हुई थी।

'तुम रो रहे हो भाई?'

'और मैं कहता हूं कि तुम क्यों नहीं रोते?' संतरी बोला—'मैंने तुम्हें एक दिन भी उदास नहीं देखा! न जाने क्यों! न तुम्हें रोते देखा! तुम इतने संतुष्ट हो जैसे··!'

'मेरी शादी होने वाली है।' वह बच्चों की तरह हंस पड़ा। सुनो दोस्त, मेरा नाम सुशील है और मैं अपने नाम ही की तरह सुशील हूं। सुशीलता कभी बिसरती नहीं, सौन्दर्य कभी रोता नहीं···केवल मुस्कराता है। इसलिए मैं भी मुस्करा रहा हूं।'

संतरी ने आंखें फाड़कर सुशील की ओर देखा। उस कैदी की ओर देखा, जिसके जीवन और मृत्यु के बीच की दूरी कम होती जा रही थी। जिसे हत्या के अपराध में फांसी का दंड सुनाया जा चुका था। लेकिन जो इसलिए बहुत विचित्र था कि मरने से पहले भी मुस्करा रहा था। जिसके लिए उसके दिल में हमदर्दी पैदा हो गई थी। सामान्य स्थिति में हत्यारे के प्रति भला किसे हमदर्दी होती है?'

'सुनो!' सुशील बोला। दोनों हाथों से उसने सलाखें पकड़ लीं। उसके बाल माथे पर बिखर गये थे। आंखों में एक अनोखी चमक जाग उठी थी। उसके होंठ खुले···! बहुत धीरे-धीरे उसने कहा, 'यह रात मेरे लिए सुहाना गीत बन गई है। शायद ही संसार में किसी को ये सुखद पल मिले हों, जो मुझे आज मिल रहे हैं। एक पल के लिए भी मैंने यह नहीं सोचा कि सुबह मेरी लाश पर मेरी मां, बहन विलाप करेंगी। लोग कहते हैं, बहन और बेटी से अर्थी की शोभा बढ़ जाती है, यहां न बहन है, न बेटी। न मां है, न बाप। न सुहाग की चूड़ियां फूटेंगी, मांग से न ही सिंदूर पोंछा जायेगा। जानते हो मैंने मधु को क्या लिखा है—मैंने लिखा है कि इस तरह आना जिस तरह सुहागरात में दुल्हिन अपने पति के पास आती है और देखो, अकेली न आना। अपने पति को साथ लेकर आना। इसलिए कि जीवन को स्थायित्व चाहिए, सुख चाहिए। संतुष्टि चाहिए। यह मूर्खता है कि किसी की याद में जीवन अकेले ही बिता दिया जाय। शादी के बाद जब याद के झरोखें खोलोगी तब मेरे प्यार के झोंकों से तुम्हारे माथे पर जुल्फें बिखर जायेंगी और तुम्हारा पति चुपके से उन्हें हटा देगा और तुम्हारी आंखें अपने चुम्बन से बन्द कर देगा, उस पल मेरी याद जिन्दगी के आकाश पर सितारा बनकर मुस्करायेगी और चांद बनकर जगमगायेगी।···तुम सुन रहे हो या ऊंघ रहे हो?'

संतरी ने चौंककर अपनी आस्तीन से आंसू पोंछे और सुशील की ओर देखकर बोला—

'मैं तो तुम्हारी एक बात भी नहीं समझ पा रहा हूं।'

'इसलिए कि तुम बूढ़े हो गये हो। पचास साल की उम्र में आदमी की भावनाओं को आग पर समय की धूल जम जाती है इसलिए तुम्हारी समझ में यह बात नहीं आ रही है कि मैं मधु के लिए क्यों इतना बेचैन हूं और मैंने यह निर्णय कैसे कर लिया कि

मेरी प्रेमिका विवाह कर ले ? जानते हो मैं केवल प्रेमी ही नहीं, मित्र भी हूं। एक बात जो मैं किसी से नहीं कह सकता था वह केवल तुम्हें बतलाऊंगा। लेकिन अभी नहीं। जब मुझे फांसी के तख्ते पर पहुंचाया जायेगा, तब तुम्हारे कान में चुपके से कह दूंगा। अभी नहीं बताऊंगा। इसलिए कि मेरी अपनी बात है और बात जब मुंह से निकल जाती है तो पराई हो जाती है। इसलिए तुम्हें अब कुछ नहीं बताऊंगा। तुमसे कुछ न बोलूंगा। बस एक अहसान कर दो। मेरे दोस्त रंजन की वे तस्वीरें दे दो, जो तुम्हारे पास हैं। मैं उन्हें देख लूं। थोड़ी-सी देर···पहले रंजन फिर मधु।'

संतरी कुछ नहीं बोला। उसने एक तस्वीर अपनी जेब से निकाली और सुशील की ओर बढ़ा दी।

सुशील ने तस्वीर ली और सलाखों से पीछे हट गया। मद्धिम रोशनी में उसने तस्वीर अपनी आंखों के सामने रख ली जैसे कोई होशियार पूंजीपति नोट परख रहा हो।

अचानक आंखों में धीरे-धीरे आंसुओं की बूंदें टकराने लगीं। धुंधलाहट इस तरह बढ़ने लगी जैसे तूफान आ रहा हो। समुद्र का तूफान···जैसे लहरें सिर में टकरा कर गुजर रही हों। उन लहरों पर रंजन की तस्वीर ऊपर-नीचे होती हुई धीरे-धीरे बढ़ रही हो। बढ़ती जा रही हो। मास और वर्ष की दूरियां मिट गई हों। समय की लीला ने अपनी महफिल को रेशमी पर्दे से हटाकर अतीत के चेहरे से नकाब उलट दिया हो। सुशील को लगा जैसे रंजन उससे कह रहा हो—

'क्या हुआ सुशील···?'

आज से कई साल पहले—

'क्या हुआ सुशील को ?' यह आवाज थी, जो उसके कानों से टकराई थी, लेकिन वह आंखें न खोल सका था फिर भी वह पहचान गया था कि यह आवाज रंजन की है।

मार्च के अन्तिम दिन थे। परीक्षा में अभी काफी दिन थे। लेकिन लड़कों ने पढ़ने की तैयारी शुरू कर दी थी; और आमतौर से वे लोग जो क्लास गोल कर दिया करते थे, वे भी अब क्लास में दिखायी देने लगे थे। इस आशा से कि इन दिनों अध्यापक जो कुछ बतायेंगे वही परीक्षा में आयेगा। लेकिन सुशील क्लास से बाहर निकल आया था। उसे उल्टियां-सी आ रही थीं। लड़कों से भरा हुआ क्लास उसे चावल की प्लेट की तरह दिखाई दे रहा था और मास्टर साहब उसे अपनी मेज-कुर्सियों के साथ उस दाल की तरह दिखाई दे रहे थे जो चावलों पर छिड़क दी गई हो।

पिछले बीस दिन से खाने पर उसने कुछ नहीं खाया था। पूरे बीस दिन, दस पैसे रोज खर्च करके, बिताए थे। कभी भुने हुए चने, कभी गाजर और कभी दोस्तों के साथ चाय-बिस्कुट। कभी हरे चने। इस तरह पेट तो भरता नहीं बल्कि भूख और चमक उठती है। इसलिए वह भूखा था। लेकिन उसने निश्चय कर लिया था कि भले ही वह भूखा मर जाए लेकिन हीरालाल के यहां नहीं जाएगा।

हीरालाल उसके दूर के रिश्तेदार थे। आठवीं कक्षा तक वह अपने सगे चाचा के घर रहकर पढ़ा था, लेकिन जब उसके चाचा कनाडा जाने लगे तो वह उसे हीरालाल के यहां छोड़ गए। एक-दो महीने तो उसे कोई असुविधा नहीं हुई, लेकिन फिर पूरे घर ने उसका जीना दूभर कर दिया। हीरालाल के लड़के चाहते थे कि वह उनके जूतों पर पालिश किया करे। उनकी पत्नी चाहती थीं कि वह घर का सामान और साग-सब्जी बाजार से खरीदकर लाया करे। और हीरा-लाल···पता नहीं, वह क्या चाहते थे ? वह रात को बाहरी कमरे में उससे पैर दबा कर कार्य कराते थे। लेकिन इसके बाद वह जो कुछ चाहते थे उसका नन्हा-सा मस्तिष्क विद्रोह कर उठता था। इसलिए एक रात वह हीरालाल को दांतों से काट कर भाग निकला था। फिर न उसे कोई बुलाने आया और न किसी ने उसकी खबर ही ली थी। इस बात को बीस दिन बीत गये थे। वह उन लोगों में से था जो अक्सर यह शेर गुनगुनाया करते हैं—

तुम तो हो बड़ी चीज वो खुद्दार हैं हम
लोग।
खुद अपना भी अहसान गवारा नहीं
करते॥

और सुशील की खुद्दारी, उसके स्वाभि-मान ने भी यह गवारा नहीं किया कि वह अपने किसी साथी से कह सके कि वह भूखा है। पढ़ने-लिखने में वह तेज था। इस वजह से कस्बे में जहां अब डिग्री कालेज खुल गया था, थोड़े से ही पढ़े-लिखे लोग थे। वे सब उसे जानते थे। लेकिन किसी को भी यह मालूम न था कि उस पर क्या बीत रही है।

अब तो भूख के कारण यह हालत हो गई थी कि जब वह अपने बॉयलौजी के साथी से सुना करता था कि आज उसने मेंढ़क चीरा

शेष पृष्ठ ३९ पर

डा० सतींद्र जैन, नाशाद—जबेरा : आपस की बातें आप सबके सामने क्यों करते हैं ?

उ० : क्या आपने सुना नहीं :

परदा नहीं जब कोई खुदा से,
बंदों से परदा करना क्या ?

महमद रऊफ मेमन, नांदेड—महाराष्ट्र : चाचा जी, महात्मा गांधी अहिंसा के पुजारी थे। फिर वह लाठी लेकर क्यों चलते थे ?

उ० : अहिंसा का पाठ वह उन लोगों को पढ़ाते थे, जो भेड़, बकरियों के सामान हैं। अब आप बताइये, भेड़, बकरियां चराने वाले के हाथ में क्या होता है ?

महेश खारीवाल, सुमन कृष्णात्री—संगरीया : दुनिया में सबसे बड़ा अपराध क्या है ?

उ० : कभी छोटा सा भी अपराध न करने की कसम खाना।

डा० सुरेश कक्कड़ "रोजी"—चंद्रनगर : चाचा जी, विवाह के अवसर पर दुल्हा घोड़ी पर ही क्यों बैठता है, घोड़े पर क्यों नहीं ?

उ० : क्योंकि घोड़ी शुभ मानी जाती है। हमारे विव: अवसर पर घोड़ी तो मिली नहीं थी। हमें साईकिल के कैरियर पर बिठा... की वालों के द्वार तक ले गये थे। अब हालत यह है कि हम अपने घर के द्वार में भी जैसे जाते हैं, यह हमी जानते हैं।

पवन खत्री "वैरागी"—इंदौर : आप सबसे अधिक प्यार किससे करते हैं ?

उ० : अपने दुश्मनों से (सुना है जिसे अधिक प्यार करो, भगवान उसे जल्दी उठा लेता है।)

जग्गी दुआ—करनाल : चाचा जी, क्या यह सच है कि गंजा आदमी अधिक अकलमंद होता है ?

उ० : इस प्रश्न के उत्तर में अपने मुंह मियां मिट्ठू बनने को जी कर रहा है, पर इस बात से डर लगता है कि कोई कह देगा। अगर यह बात सच होती तो सब प्राणियों में कछुआ सबसे अकलमंद होता, क्योंकि उसके सर पर तो क्या सारे जिस्म पर एक भी बाल नहीं होता।

हंसराज गुलाटी—रिवाड़ी : चाचा जी, क्या आप दारा सिंह से कुश्ती लड़ेंगे ?

उ० : एक दारा सिंहनी हमारे घर में है जिससे हम हर कुश्ती हार जाते हैं यह क्या आपकी खुशी के लिये कम है।

चन्द्रशेखर गोस्वामी—हरिद्वार : यदि चाची, चिकमगलूर से आपके नाम के नामांकन पत्र भर देतीं तो क्या होता ?

उ० : जार्ज फर्नांडीस और चन्द्र शेखर, इन्दिरा गांधी पर एक और आरोप लगा देते कि इस पर भी आयोग बिठाओ। यह कहते हैं किसी बच्चे के मुंडन में किसी के हाथ से लड्डूओं का थैला गिर जाये तो उसमें भी कसूर इन्दिरा गांधी का ही होता है।

डा० कन्हैयालाल कोमल—हाथी, वाराणसी : पत्नी रूठ कर 'पिता के घर' चली जाये तो पति को कहां जाना होता है ?

उ० : उसके लौट आने का पत्र पाने के लिये 'डाक घर' और ऐसा ना हो सके तो अपने रहने के लिये जगह ढूंढ़ने 'चिड़िया घर।'

नवीम, 'हैप्पी'—नागौर : चाचा जी, क्या आपने कभी वह चीज पी है, जिस की सिफारिश श्री मोरार जी देसाई करते हैं ?

उ० : अपने एक मित्र से हमें उसका अनुभव हुआ है। पर जैसा अनुभव हुआ है, वह श्री मोरार जी देसाई की आशाओं पर चाहे कुछ और न फेरे, पर पानी अवश्य फेर देगा। पिछले दिनों वह 'लाल परी' की पूरी बोतल पीकर मैखाने से बाहर निकले, बुरी तरह झूम रहे थे और उनसे चला नहीं जा रहा था। गिरते पड़ते लड़खड़ाते, ट्रैफिक से बचते और बिजली के खम्बों से टकराते वह आगे चल कर एक गंदे नाले में जा पड़े। नशे की हालत में वह पता नहीं कितनी देर नाले में पड़े रहे। तभी वहां एक कुत्ता आया और ऊपर से उसने अपनी टूंटी खोल... इस पर हमारे मित्र अपने हाथों से ओक... कर गर्दन ऊपर उठाते हुये बड़ी मु... आवाज में बोले, 'साकिया और ! बस... जाम और।'

पिताम्बर खर्युड़िया, गुलाब—बीकानेर ... चाचा जी, क्या चिल्ली के साथ मोटू, ... भी मेरे घर माल खाने की दावत प... सकते हैं ?

उ० : पहले वे पूछते हैं क्या आप का... लब मार खाने की दावत से तो नहीं है...
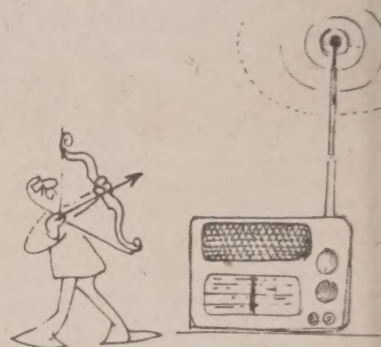
मुहम्मद जुबैर, फरीदी—बिलारी : ... मेरे प्रश्नों के उत्तर नहीं देते। क्य... प्रश्न न लिखूं ?

उ० : अवश्य लिखिये। पर प्रश्न होना ... नया, चटपटा, चौंका देने वाला, मन... और जानदार। जो पाठक पुराने प्र... दोहरा कर उत्तर न देने की शिका... हमारी जान लेना चाहते हैं। उन्हें पह... देखना चाहिये कि उनके प्रश्न में ... जान है।

जगदीश लूथरा—चन्द्रनगर, दिल्ली ... किसी बात पर आपको दिन में ता... आ जायें तो आप क्या करेंगे ?

उ० : यह कोशिश कि किसी प्रकार य... हमारी श्रीमतीजी को पता न लगने ... वर्ना इस बात पर हमारी चान्द मुस... पड़ जायेगी कि 'दिन में तारे' देखने ... बहाना है। 'रात में फिल्मी सितारे ... होंगे।
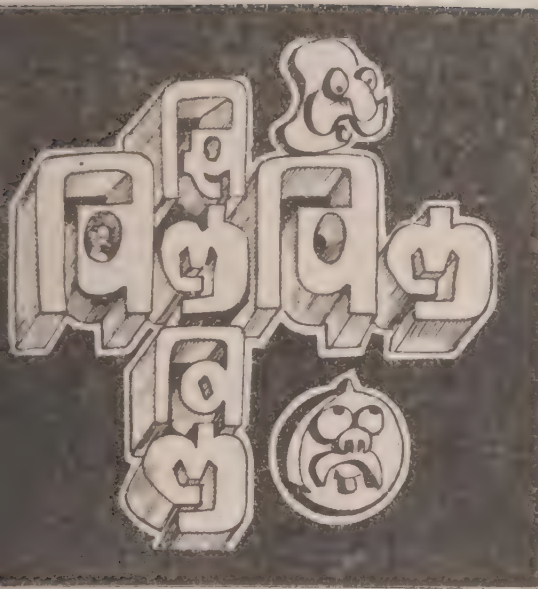
ग्रोर इस तरह कपिल देव ने एक ग्रौर चौका मार कर ग्रपना स्कोर ग्राठ बना लिया है। दोनों ही चौके बहुत शानदार थे फील्डरों को रोकने का कोई मौका नहीं मिला।
ती से ग्रपना स्कोर बढ़ाते हुए कपिल देव घावरी से ग्रागे निकल गये हैं। ग्रब सिकन्दर बख्त मुड़े नी ग्रगली बॉल फेंकने के लिये…ग्रौर उनकी यह गेंद शार्ट पिच्ड…कपिल देव ने हुक कर दिया, गेंद सीधे फील्डरों के सिर पर से होते हुए साइट स्क्रीन के पास जा गिरी। दर्शकों की तालियां, कपिल देव का यह बहुत शानदार छक्का।
कपिल देव थमने पता है ग्रपने ही हरयाणे का लड़का है, ग्ररे ग्रपने ही गाम के पास का। दूर रिस्तेदारी में म्हारा भतीजा लगता है। इस लमडे को तो हमने ग्रपनी ही गोद मां खिला रखा शाबास म्हारे हरयाणे का ग्रौर म्हारी बिरादरी का नाम ऊंचा कर दिया। शाबाश बेटा शाबाश!
कपिल देव की यह धुग्रांधार बैटिंग भारत के ग्रौर खास कर हरयाणे के किसानों की जीत है।
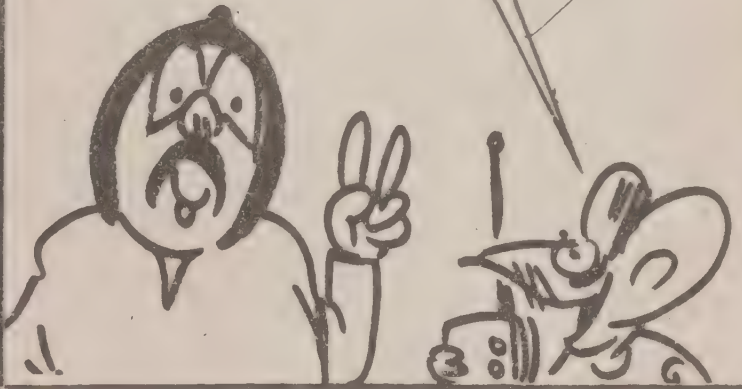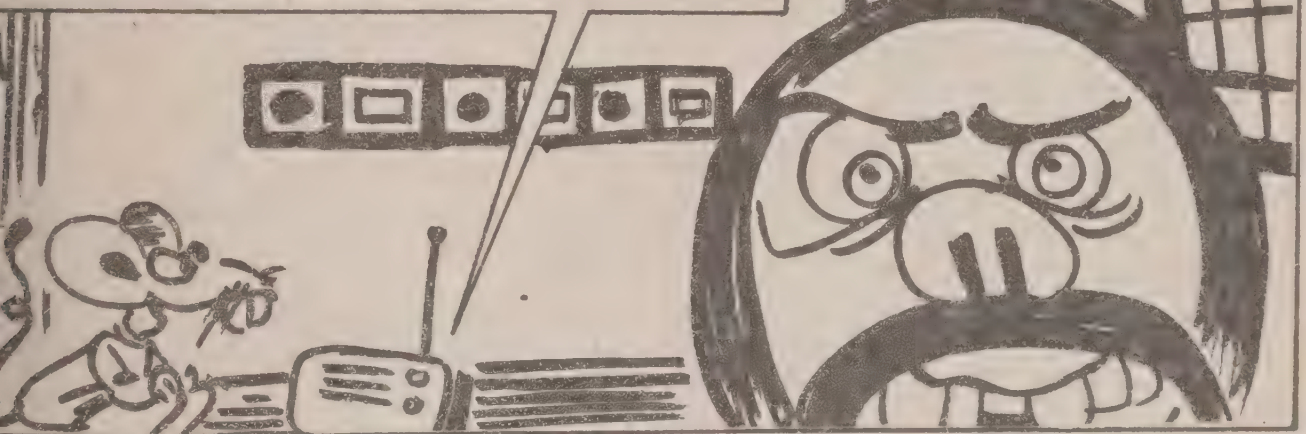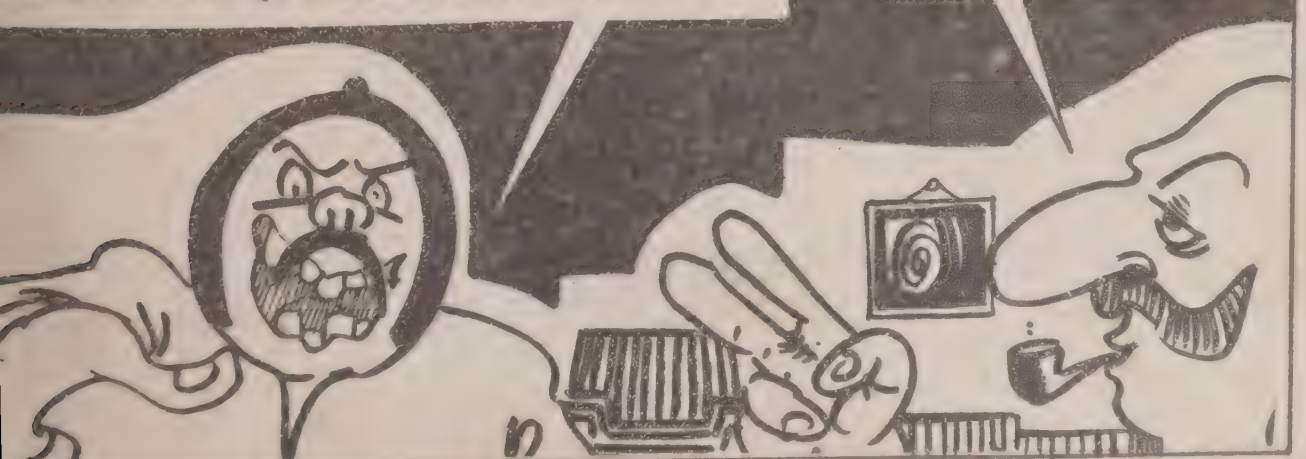
इव थम होशियार रहना ! दिसम्बर में चौधरी चरणसिंह जी के जन्म दिवस पर जो किसान रैली होने वाली है। उस पर कपिल देव की इस बैटिंग का गहरा असर पड़ेगा। जाट किसानों के हौसले चरणसिंह के इस्तीफे से जो धीमे पड़ गये थे। अब कपिल देव के इस छक्के की सहायता से बुलन्द होकर बादलों को छूने लगेंगे। सब किसान भाई दूने उत्साह से रैली में भाग लेंगे। थम लोग दिल्ली में न रहना वर्ना ये थारे भी छक्के छुड़ा देंगे। इनका कोई भरोसा नहीं है।
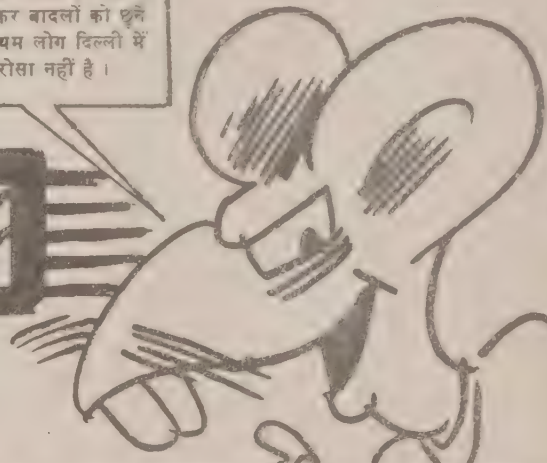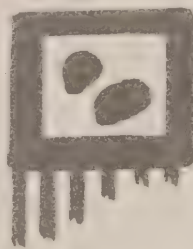
इस वक्त कपिल देव ४८ रनों पर शानदार बल्लेबाजी करके खेल रहे हैं। देखना है कि वे अपने टेस्ट जीवन का पहला अर्द्ध शतक पूरा कर पाते हैं या नहीं।
बेटा, हरयाणे की धरती की लाज रखना।

जरूर हाफ सेंचुरी पूरा करेगा हमारा लमडा। लमडे
घी और घर के बने शक्कर की ताकत है। कपिल देव
हम सब किसानों के नाम को चांद लगायेगा। केवल
की कसर है।

सारा स्टेडियम तालियों से गूंज उठा है। सरफराज नवाज की एक तेज उठती हुई गेंद को
देव ने बहुत ही शानदार तरीके से हुक करके छक्का मारा है। उनका अर्द्ध शतक पूरा।
५४ इस छक्के की सहायता से।
शाबाश ! बेटा शाबास।
क्या कह रियों था मैं ?
अपने-अपने सर बचा लो भाई लोगों, बॉल न लग जाए।
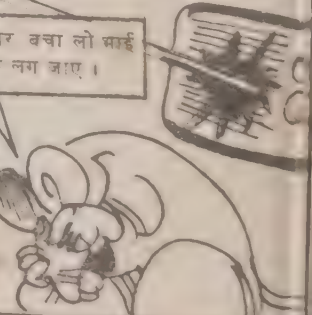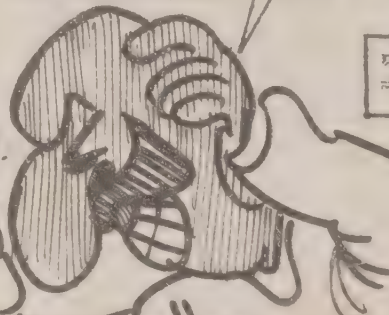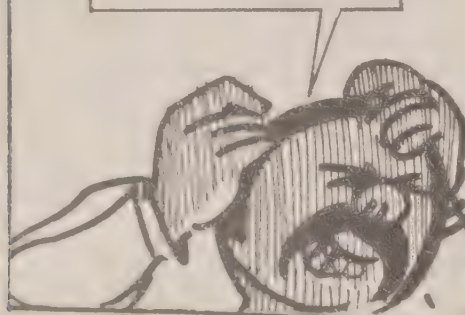
मय कपिल देव ५८
र खेल रहे हैं।
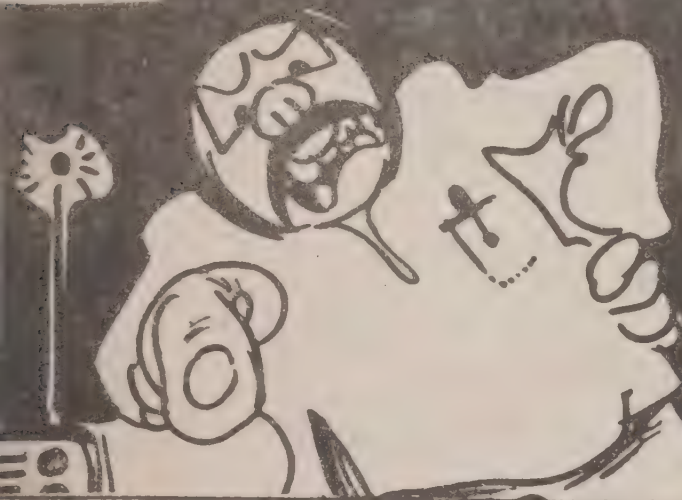
देखा महर वालो, म्हारे हरयाणे के जाट बिरादरी के सपूत का कमाल ! इब तो थमका हमसे आंख मिलाते भी सरम आ रही होगी। थमने महर मा कभी ऐसा बैटस मैन पैदा किया है ? थम रासन की दुकान की लायन मां खड़े रहकर मिट्टी तेल और मैदा खरीदने वाले लोग हरयाणा के गांवों की बात क्या जानो ? इब थमको पता लग जायेगा कि हम क्या हैं ? थमने आज तक हमारी बात मजाक समझी। म्हारे नेताओं का अपमान किया।

और पाकिस्तान को यह पहला धक्का! कपिल देव की गेंद पर माजिद खां क्लीन बोल्ड…वे वापिस पैविलियन जा रहे हैं।

देखा, देखा, देखा? मने क्या कहा था? म्हारे हरयाणे का कपिल देव…

 पिलपिल-सिलबिल के नये कारनामे अगले अंक में प

दीवाना अंक २८ मिला। पढ़कर बहुत ा लगा। इसमें मोटू-पतलू और पिलपिल-बिल, कम्प्यूटर मानव तो बहुत ही क था। चिल्ली लीला भी बहुत पसन्द । इतना अच्छा अंक निकालने के लिए और से बधाई। कृपया आप फिल्मी नेत्री पूनम का फोटो छाप कर उसका वय सहित पूरा पता भी दें।

नीलम सूद—गोहाटी

दीवाना का रक्तदान केन्द्र वाला अंक ३४ मिला। इस अंक ने भी अन्य अंकों तरह खूब हंसाया! वैसे भी दीवाना का क अंक अपनी दीवानगी मे परिपूर्ण होता है। चिल्ली लीला नं० २३७ व मोटू-लू के जिगरी दोस्त घसीटा राम की शुभ ा पढ़ते-पढ़ते हमारी हंसने की यात्रा जारी अर्थात जब तक हम चित्र कथा पढ़ते हंसते रहे। पिलपिल-सिलबिल व अन्य भों ने भी बहुत हंसाया!

दिनेश मटाई 'राजा'—इंदौर

२७ अक्तूबर के दीवाना के मुख पृष्ठ चिल्ली को सब्जी वाला बना देख कर ना ही पड़ा कि अब हमारा देश वाकई ति कर रहा है जो यहाँ सब्जी वाले भी एयर फ्राइट द्वारा सब्जी बेचते हैं। ही यह सोच कर कि अब ताजी सब्जियां को मिला करेंगी अपार हर्ष हुआ। इस की प्रशंसा करने के लिए हमें डिक्शनरी ब्द ढूंढ़ने पड़ेंगे।

रमेश चन्द्र देव—जनौली

क्या पाठक काका के कारतूस में दो एक साथ भेज सकते हैं? कृपया यें? वैसे तो दीवाना एक ऐसी पत्रिका तो हम पाठकों को दीवाना बना है। दीवाना का हर अंक पाकर मैं ही खुश रहती हूं। क्योंकि इसमें सभी हैं जो पाठकों का भरपूर मनोरंजन हैं। **नीना मेनन—बंगकेर (म० प्र०)**

दीवाना अंक ३४ मिला। पढ़ कर व में परमानन्द महसूस किया। दीवाना भी सदस्यों को मेरी ओर से हार्दिक मनायें। अगर आप पाठकों के चुटकले शित करें तो मैं आपका बहुत ही एहसान-होऊंगा। छपाई-रंगाई पर ध्यान दें।

भगवान करे दीवाना दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति करे।

योगेश कुमार अग्रवाल—डीमापुर

३३ वां अंक इतना लाजवाब था कि मैं कह नहीं सकता। 'पिलपिल-सिलबिल' पढ़ा तो हंसते-हंसते बुरा हाल हो गया। 'घसीटाराम का भाग्य' पढ़ा तो और भी बुरा हाल हो गया। मेरे पिताजी दीवाना नहीं पढ़ते थे, लेकिन अब वो भी सब अंक बड़े शौक से पढ़ा करते हैं, बस आप यूं समझिए कि हमारे घर में कोई लोकप्रिय पत्रिका है तो बस दीवाना। दीवाना के किन-किन फीचरों की तारीफ करूं, सब तो एक-से-एक हैं। **मनोज, अशोक,—हजारी बाग**

दीवाना का अंक ३७ प्राप्त हुआ। खुश किस्मती से इस अंक में चिल्ली लीला से लेकर 'सवाल यह है कि' और परोपकारी तक सभी कुछ बहुत-बहुत पसन्द आया। मैं जब भी दीवाना का ताजा अंक पढ़कर हटता हूं तो मेरा दिल चाहता है कि फटा-फट दूसरा अंक मेरे हाथों में आ जाए।

भूपेन्द्र देवगुन—अन्धा मुगल

दीवाना दाढ़ी के रूप में देखने को मिला। आकर्षक पृष्ठ ने बरबस ही अपनी ओर आकर्षित कर लिया, फिर क्या था दीवाना खरीदा और पढ़ने बैठ गया। स्वर्णसिह जी के नाम पत्र ने तो होंठों पर मुस्कराहट लाते ही आगे के पृष्ठ पलटने का आदेश दिया। 'काका के कारतूस', ओम प्रकाश गुप्ता के 'लतीफे' तथा 'आपस की बातें' अपना एक अच्छा खासा रंग जमा गए हैं खेल-खेल में तथा हाकी कैसे खेलें लेख पठनीय हैं, क्यों और कैसे ने ज्ञान में वृद्धि की और शेष पाठ्य सामग्री ने अपनी रोचकता का पुट प्रस्तुत किया। दीवाना लोकप्रिय बनता चले—ऐसी कामना करता हूं।

सुरेश खुराना—मोन्द

मैं आपका दीवाना बड़े चाव से पढ़ता हूं। दीवाना का अंक ३४ मिला। इसमें कहानी 'चक्कर साईकिल का' और 'सरकारी कुत्ता' बहुत अच्छी लगीं। स्थाई स्तम्भों में चिल्ली का व्यंग बड़ा अच्छा लगा। मोटू-पतलू की शुभ यात्रा बड़ी अच्छी लगी। मैं बाल लेखक हूं। मैं एक रोचक तथा व्यंग कहानी भेजना चाहता हूं! क्या इस कहानी पर पुरस्कार मिलेगा?

ईश्वर चन्द्र—बस्ती

यदि कहानी दीवाना में प्रकाशित हुई तो पुरस्कार अवश्य मिलेगा। —सं०

मैं दीवाना का एक नियमित पाठक हूं। बुक स्टाल पर पहुँचने से पता चला दीवाना अंक ३७ आने वाला है। कुछ ही मिनटों में दीवाना मिल गया ऐसा लगा मानो कोई खजाना मिल गया है। चिल्ली का शेव बनाने का तरीका बहुत अच्छा लगा। दूसरी आत्मा का भाग १४ अच्छा रहा। पिलपिल सिलबिल, मोटू पतलू भी अच्छे रहे। बाकी सारी सामग्री हास्यप्रद थी। आशा है अगला अंक भी रोचक होगा।

जुबैर अहमद—नई दिल्ली

दीवाना का मैं तब से पाठक रहा हूँ जब यह ३० पैसे का मिलता था, इसमें मोटू-पतलू, सिलबिल-पिलपिल, चिल्ली लीला आदि हमें बहुत पसन्द आते हैं। कृपया मदहोश तथा फिल्मी पैरोडी सब अंकों में दिया करें, मैं अप्रकाशित हास्य कथाएं भेजना चाहता हूं, क्या प्रकाशित होंगी?

किशोर कुमार—आगरा

यदि कहानियाँ दीवाना के स्तर की हुई तो अवश्य प्रकाशित होंगी। —सं०

बच्चा झमूरे का

सुनहरी असूल

पिछले सप्ताह बच्चा झमूरे ने अपने मित्र कनखजूरे को एक सुनहरी असूल समझाया, एक काम की बात बताई।
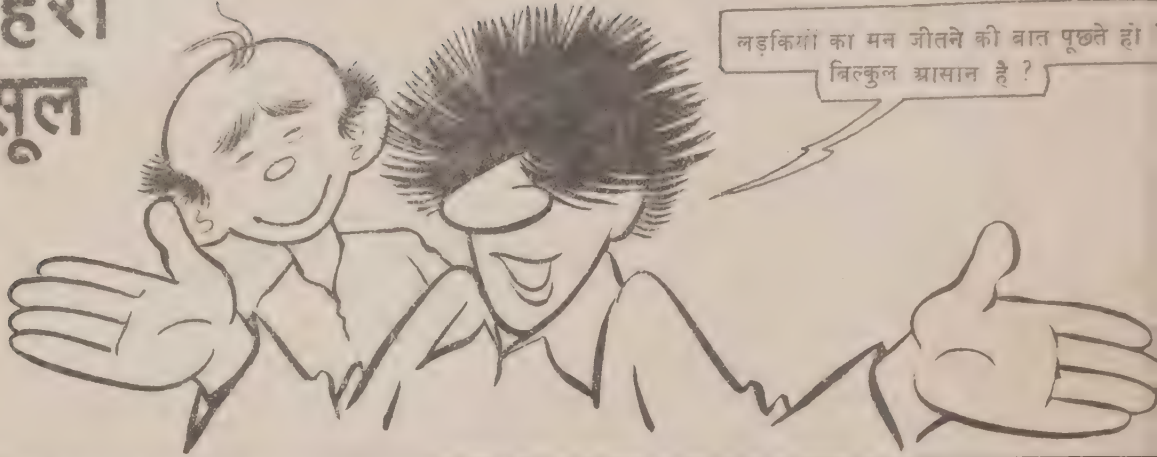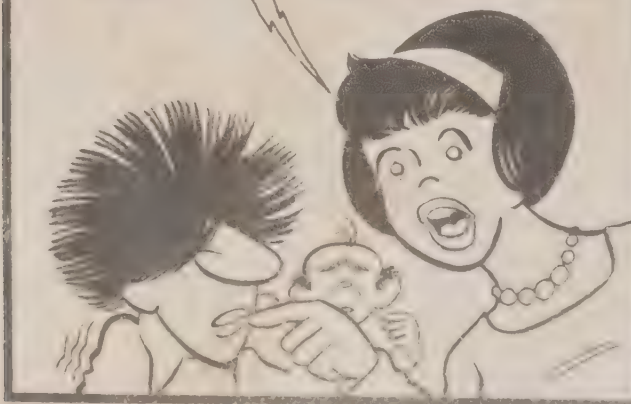
इन जोकरों से आगामी अंक में फिर मिलना न भू

कैबरे डांसर रोजी की हत्या कर दी गई और उसकी लाश पाई गई उसकी सहेली एयर होस्टेस शैली के फ्लैट में। पर शैली हत्या के आरोप से बच गई। रोजी बड़े-बड़े आदमियों से मिलकर शाईकांग नाम के एक षड्यंत्रकारी के लिए जासूसी करती थी। उसने अपने कैमरे पर एक जर्मन वैज्ञानिक की फाइलों के राज चुराये थे, जो वह शाईकांग को देना नहीं चाहती थी। यही बात उसकी हत्या का कारण बनी और कैमरे की रील शाईकांग ले-उड़ा। उसका पीछा करते हुए मोटू, पतलू और चेलाराम हिन्द महासागर में ज्वाला नाम के एक छोटे से द्वीप में पहुच गये जहाँ चेलाराम और पतलू तो गंग की पकड में आये हुए हैं और मोटू द्वीप के मालिक और मोतियों के अरब पति सौदागर राहुल का मेहमान बना हुआ है।

राहुल की आयु एक सौ साठ साल है। उसे डर है कि इतनी लम्बी आयु के बाद अब वह कभी भी मर सकता है। उसने डाक्टर जीरो नाम के एक खतरनाक वैज्ञानिक को करोडों रुपया देकर एक गुप्त रिसर्च लैबोर्टी बनवाई है। डाक्टर जीरो ने शाईकांग के गंग से मिलकर बड़े-बड़े देशों से प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों का अपहरण किया है। उसने अपने मतलब की मशीनें और खुफिया राज चुराये हैं और द्वीप के मालिक राहुल को यह झांसा दिया है कि वह एक ऐसी मशीन बना रहा है, जो किसी भी आदमी को अमर बना सकेगी। कभी न मरने और रहती दुनिया तक जीवित रहने के लालच में राहुल डाक्टर जीरो की हर बात मान रहा है और इस चक्कर में डाक्टर जीरो ने शक्तिशाली सूक्ष्म किरणें उत्पन्न करने वाला एक ऐसा यन्त्र बना लिया है जो आकाश में किसी भी विमान को अपने नियन्त्रण में ले सकता है और उसे वहीं भस्म कर सकता है। डाक्टर जीरो की चालों को भांपने के लिए मोटू छुपता छुपाता उसकी गुप्त प्रयोगशाला में पहुचा हुआ है। इसके बाद के हंगामे आगे देखिये।

हाई पावर बीम ने जहाज को आकाश में पकड़ लिया है। उसके इंजन बन्द हो गये हैं। अब वह पूरी तरह हमारे नियन्त्रण में है। अपनी मर्जी से वह जरा भी नहीं हिल सकता।
एयर पोर्ट के कंट्रोल रूम से बात करो कि हमने उनका जहाज अपहरण कर लिया है।
गैंग के कंट्रोल रूम का एयर पोर्ट के कंट्रोल रूम से सम्पर्क स्थापित होते ही।
क्या कहा, 'तुमने जहाज का अपहरण कर लिया है ? पर रुका कैसे ? इंजन कैसे बन्द हुआ। वह गिर क्यों नहीं रहा है ?
जब हम चाहेंगे तब गिरेगा।
एयरक्रेश में तुम भी मारे जाओगे।
हम जहाज के अन्दर नहीं हैं। हम मारे नहीं जाएंगे।
तुम जहाज के अन्दर नहीं हो तो कहां हो ? जहाज रोका कैसे ?
यह तुम सात जन्म पता नहीं लगा सकते।
तुम जहाज के अन्दर नहीं हो, फिर तुमने जहाज का अपहरण कैसे कर लिया। तुम हो कहाँ, तुम्हारा केन्द्र कहाँ है ?
काम की बात करो। पचास लाख रुपये दे रहे हो ?
तुम्हारे अड्डे पर पहुंचा देंगे। बताओ तुम्हारा अड्डा कहाँ है ?
चारसौबीसी कर रहे हो ! अभी बताते हैं हमारा अड्डा कहां है।
पचास लाख रुपया जैसे हम बतायें वैसे हमारे हवाले कर दो। नहीं तो हम इस जहाज को तबाह कर देंगे।
ऐसे तो हम पांच पैसे भी नहीं देंगे। पहले बताओ, यह चक्कर क्या है ?
अभी बताते हैं।
कंट्रोल बीम में हाईवोल्टेज करन्ट मिला दो।
आल राइट डाक्टर।
और देखते ही देखते जहाज में आग लग गई और वह लपटें और धूआँ उगलता हुआ नीचे गिरने लगा
जहाज का मुँह समुद्र की ओर हुआ और वह नीचे गिरता हुआ समुद्र में डूबता चला गया।
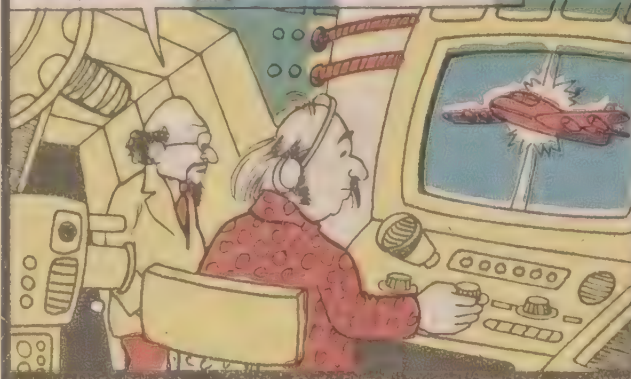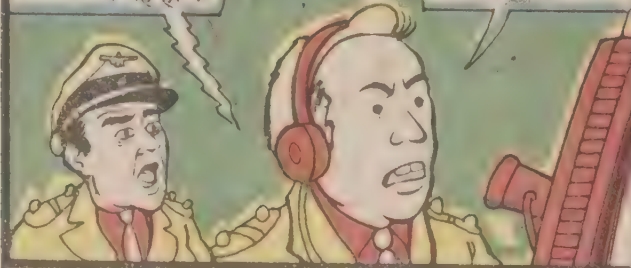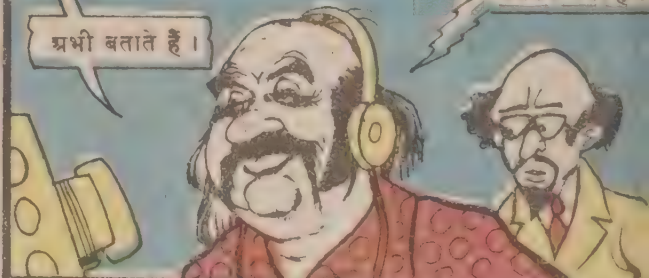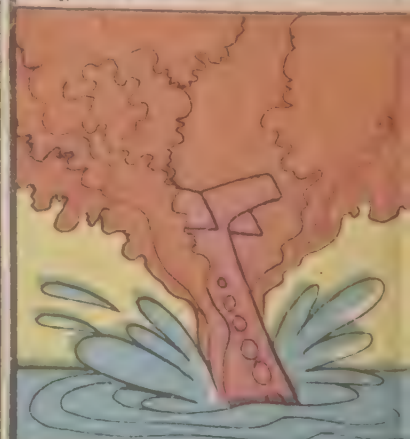
जहाज तबाह हो गया। साढ़े तीन सौ आदमियों की जानें चली गई।

दूसरी बार एक अन्तरिक्ष यान बीम की पकड़ में आ गया।

लाखों करोड़ों और अरबों रुपये की क्या बात है। अब तो यह दुनिया वाले पूरे-पूरे देश हमारे हवाले कर देंगे।
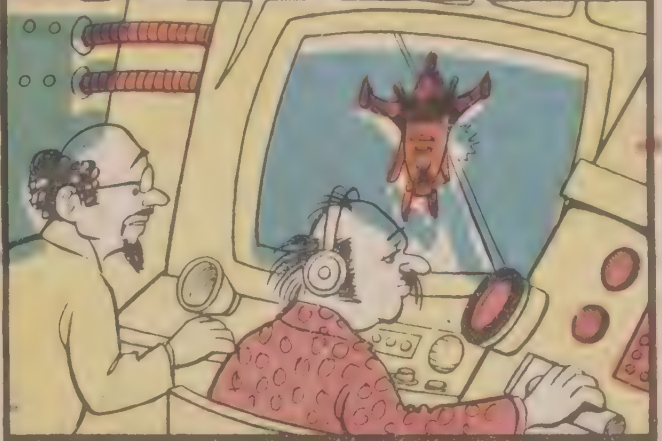
अन्तरिक्ष नियन्त्रण केन्द्र पर।
अन्तरिक्ष यान की गति समाप्त हो गई। यह एक जगह रुक कैसे गया है।
लगता है अपनी दिशा बदल रहा है।
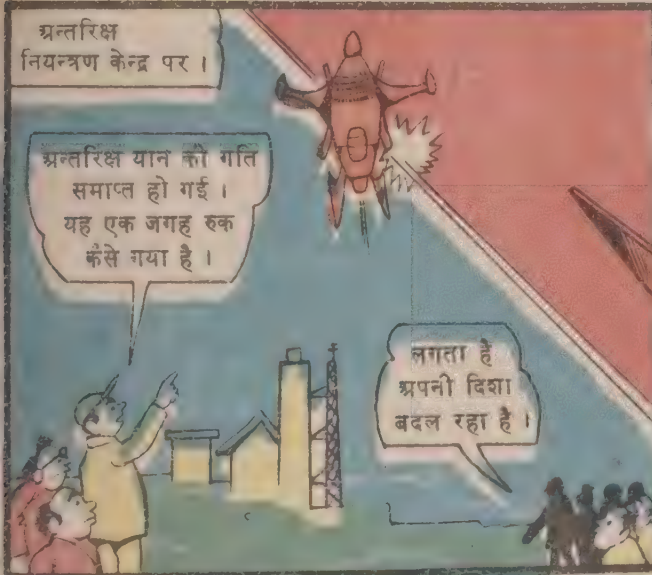
थोड़ी ही देर बाद अन्तरिक्ष यान ने अपना मुंह पृथ्वी की ओर मोड़ा....

हमने तो मगलग्रह पर उतारने के लिए सेट किया था।

ग्रोर देखते ही देखते वह स्पेस सैंटर के नगर पर ग्रा पड़ा । ग्रब चारों ग्रोर तबाही थी । मकान माचिस की डिब्बियों की तरह उड़ रहे थे । इस भयंकर तबाही ने चारों ग्रोर हाहाकार मचा दी थी ।
GAM STORE
REGA
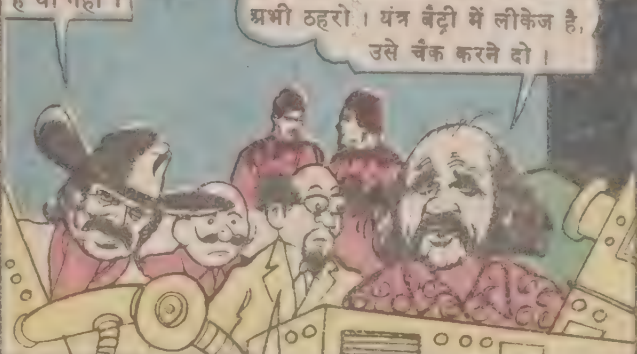
प्रयोगशाला से बाहर लाकर उन लोगों ने मोटू को एक अन्धेरी कोठरी में धक्का दे दिया ।
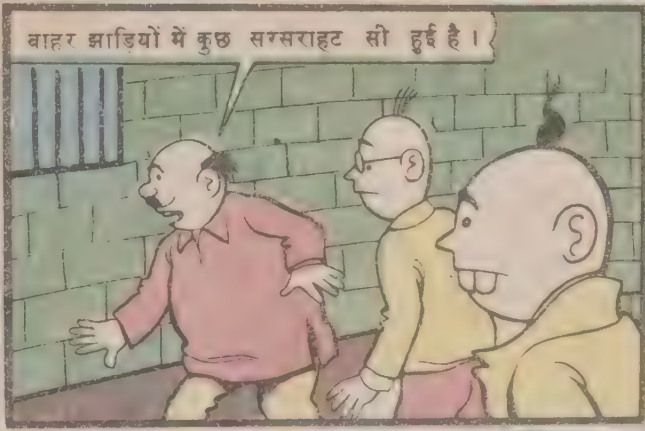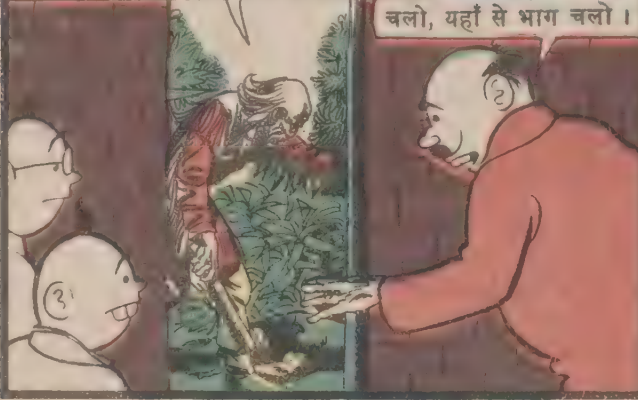
इन्हें पकड़वाने के लिए हमें भारत से पुलिस सहायता लेनी होगी । वहां झाड़ियों में समुद्र के किनारे मेरा एक स्टीमर छुपा हुआ है । उसमें बैठकर तुम यहां से भाग जाओ ।

अपहरण किए वैज्ञानिकों की जान बचाने के लिए मैंने उन्हें एक स्टीमर में पहले से भगा दिया है ।

और आप ?

मुझे अभी यहां बहुत काम है ।

गोली सीधी राहुल के कंधे पर लगी ।
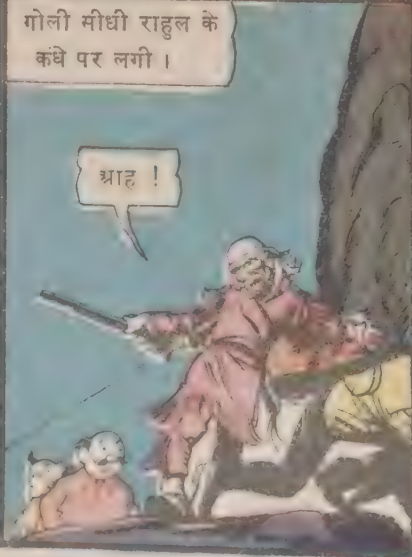
आह !

आज तक जिन लोगों की जानें डाक्टर जीरो ने ली हैं उनका पाप मेरे सर भी है। मुझे तो ऐसी सजा मिलनी ही थी। पर मैंने बताया था ना? एक दिन मैं इस पूरे द्वीप की अपने प्रयोगों की हर निशानी को मिटा दूंगा। अब वह समय आ गया है। तुम भाग जाओ स्टीमर में बैठकर। मैंने जो भी कुछ करना है वह दस मिनट बाद करूंगा।
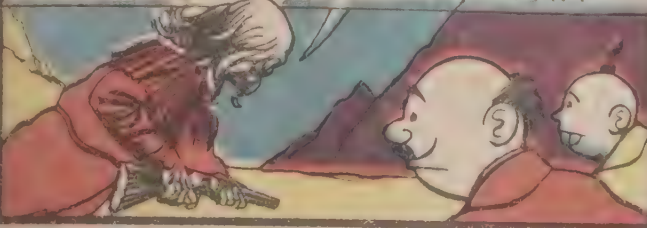
मोटू पतलू और चेलाराम के पास वहां से भागने के अलावा और कोई चारा नहीं था।

इस समय राहुल ठीक उस जगह के पास था जहां उसने एक दिन इस द्वीप को बारूद से उड़ाने के लिए बहुत सा बारूद जमा किया हुआ था।
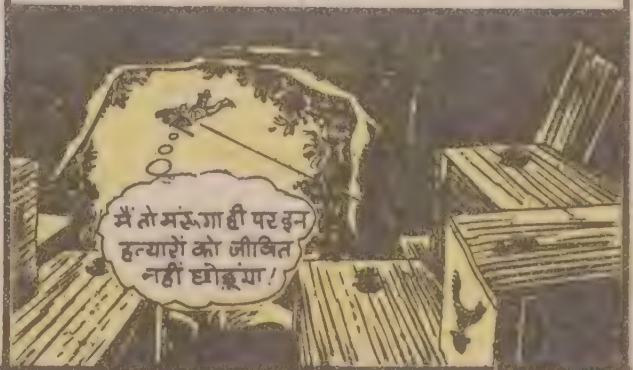
गोली लगते ही बारूद से पूरा द्वीप उड़ ग

उफ! यह क्या हो गया।

धड़ाम

वहाँ अब कोई भी जीवित नहीं बचा होगा ।

राहुल ने कितना भयानक बदला लिया । खुद अपने आप से भी और अपने दुश्मनों से भी ।

मोटू पतलू का स्टीमर अब आराम से भारत के समुद्री तट की ओर बढ़ रहा था । जिस जगह अभी थोड़ी देर पहले पूरा द्वीप था । षडयंत्रकारी डाक्टर जीरो की गुप्त प्रयोग शाला थी । दुनिया की शान्ति भंग करने के लिए जहाँ बड़े-बड़े भयंकर यंत्र थे । अब वहाँ केवल धुयें के कुछ बादल रह गये थे,। हर विनाशकारी समुद्र में डूब चुका था ।
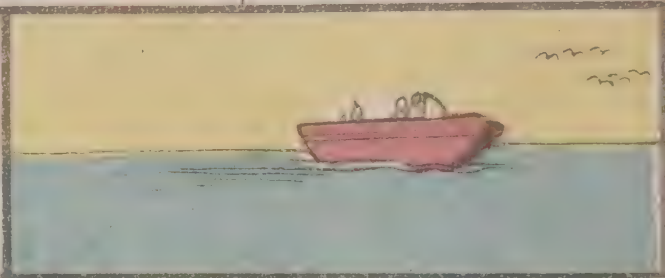
आगामी अंक में मोटू पतलू डा० झटका और घसीटाराम से उनके नये कारनामों में मिलना न भूलिये ।
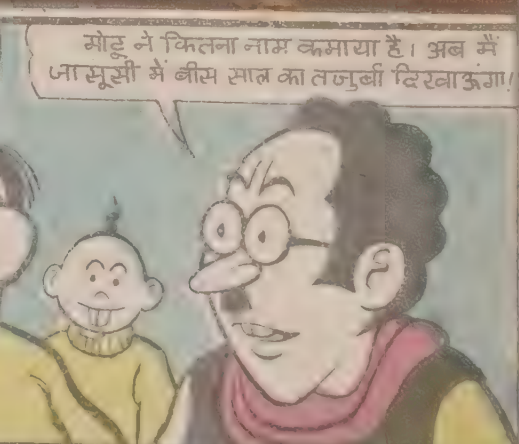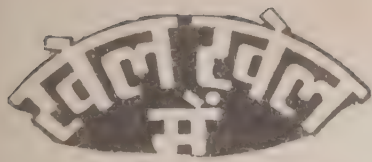
भारत पाक टैस्ट १९७८

१९७८ भारत-पाक सीरीज पाकिस्तान २-० से जीता। इस सीरीज की मुख्य बातें तथा सबक—

१. पाकिस्तान के जहीर अब्बास और जावेद मियांदाद की बल्लेबाजी छायी रही! दोनों का प्रति इनिंग्ज औसत क्रमशः १९४.३३ तथा १७९ रहा।

२. भारत की ओर से सुनील गवास्कर का औसत सर्वोच्च ८९.४० प्रति इनिंग्ज रहा।

३. सुनील कराची में दोनों पारियों में शतक बना कर विश्व के पांचवें ऐसे खिलाड़ी बने जिन्होंने टैस्ट जीवन में दो बार एक ही मैच की दोनों पारियों में शतक बनाये।

४. सुनील ने कुल टैस्टों में ३६७३ रन जोड़ कर पॉली उम्रीगर का भारत की ओर से टैस्टों के कुल रनों के ३६३१ के पुराने रिकार्ड को पार कर लिया।

५. सुनील मैन ऑफ दि सिरीज चुने गये।

६. भावी भारतीय टैस्ट क्रिकेट के लिये कपिल देव के रूप में आशा की नयी किरण का जगमगाना।

७. बेदी की कप्तानी बहुत दोषपूर्ण रही। भारत को सुनील की कप्तानी की जरूरत है।

८. पुराने भारतीय स्पिनरों की तिकड़ी अब ठंडी पड़ने लगी है। भविष्य को ध्यान में रख जल्द ही युवा खिलाड़ियों को मौका दिया जाना चाहिये। हमारा तो पहले ही मत था बम्बई के धीरज प्रसन्ना को पाक दौरे पर न भेज चयन कर्ताओं के बहुत अदूरदर्शिता का परिचय दिया।

९. अब से उन्हीं गेंदबाजों को जगह मिलनी चाहिये जिनमें बैटिंग की भी क्षमता हो। आलराऊंडरों को प्राथमिकता मिलनी चाहिये। भारतीय पिचों पर चाहे हम काम चला भी लें लेकिन विदेशी दौरों पर जब तक गेंदबाज भी रनों का योगदान नहीं देंगे भारत को सफलता नहीं मिलेगी!

भारत पाक सीरीज १९७८ टैस्ट आंकड़े

औसत

बल्लेबाजी (क्रमशः—टैस्ट, पारी, आऊट नहीं, उच्चत्तम स्कोर, कुल रन, औसत)

भारत

एस. एम. गावस्कर ३-६-१-१३७-४४७-८९.४०
जी. आर. विश्वनाथ ३-५-०-१४५-२४९-४९.८०
सी. पी. एस. चौहान ३-६-१- ९३-२१२-४२.४०
के. घावरी १-२-०- ४२- ७७-३८.५०
डी. बी. वेंगसरकर ३-५-०- ८३-१८८-३७.६०
कपिल देव ३-५-०- ५९-१५९-३१.८०
एस. अमरनाथ ३-५-०- ६०-१४७-२९.४०
एम. अमरनाथ ३-५-०- ५३- ९७-१९.४०
एस.एम.एच. किरमानी ३-५-१-३९x- ७०-१७.५०
ई. ए. एस. प्रसन्ना २-३-२-१०x- १५-१५.००
बी. एस. बेदी ३-५-१- ४- १०- २.५०
बी. एस. चन्द्रशेखर ३-४-१- ४- ४- १.३३

(ए. डी. गायकवाड़, यशपाल शर्मा, एस. वेंकटराघवन और भारत रेड्डी ने कोई टैस्ट मैच नहीं खेला।)

पाकिस्तान

जहीर अब्बास ३-५-२-२३५x-५८३-१९४.३३
जावेद मियांदाद ३-५-३-१५४x-३५८-१७९.००
इमरान खान ३-४-२ ३२-१०४- ५२.००
मुश्ताक ३-३-०- ७८-१५०- ५०.००
आसिफ इकबाल ३-६-१- १०४-१९९- ३९.८०
सिकन्दर २-२-२ २२x- ३८- ३८.००
माजिद खान ३-६-०- ४७-२२२- ३७.००
मुद्दसर २-३-०- ५७- ९८- ३२.६७
वासिम बारी ३-३-०- ८५- ९१- ३०.३३
इकबाल कासिम २-१-१- २९x- २९- २९.००
सादिक मोहम्मद १-२-०- ४१-५७- २८.५०
सरफराज नवाज ३-२-०- २८-४६- २३.००

(सलीम आकफ दूसरे टैस्ट मैच में लाहौर में खेले पर बल्लेबाजी नहीं की। इसलिये उसे आऊट नहीं माना गया।)

(x निशाने वाले खिलाड़ी आऊट नहीं हुये)

गेंद बाजी (क्रमशः—ओवर्स, मेड इन, रन, विकेट, औसत)

भारत

चन्द्रशेखर ९६-१३-३८५-८- ४८.१३
के. घावरी ३०- ५-१००-२- ५०.००
कपिल देव ११७-११-४२६-७- ६०.८६
बी. एस. बेदी १३८-२४-४५१-६- ७५.१७
ई. ए. एस. प्रसन्ना ९७-१७-२५१-२-१२५.५०
एम. अमरनाथ ६३.५- ४-२७७-२-१३८.५०
एस. अमरनाथ १.५-०-५-१-५.००
एस. एम. गावस्कर ९-१-४४-१-४४.००,
सी. पी. एस. चौहान ६-०-२९-०, जी आर विश्वनाथ ०.४-०-७-०.

पाकिस्तान

मुद्दसर १३- ५- २७- ३- ९.००
सरफराज १४८.२-२७-४२०-१७-२४.७१
जावेद, १०.३- २६- १- २६.००
इमरान खान १६३.१-४१-४४२-१४-३१.५७
मुश्ताक ७५-१५-२३५- ६-३९.१७
सिकन्दर ५६-२१-२०४- ३-६८.००
सलीम आकफ २९- ७- ७३- १-७३.००
इकबाल कासिम ८६-२७-२२४-२।११२.००
अल्सो बोल्ड : सादिक मोहम्मद ४-०-१६-०

हाकी कैसे खेलें

हाफ और बैक खिलाड़ियों की खेल-तकनीक में विशेष अन्तर नहीं है। इसलिए यदि कोई खिलाड़ी फारवर्ड खेलते हुए अपने खेल में तेजी और चुस्ती का अभाव महसूस करता है, तो उसे हाफ बैक के स्थान पर खेलने का प्रयत्न करना उचित होगा। प्रायः गोलकीपर के स्थान पर खेलने के लिए वही खिलाड़ी राजी होते हैं, जिन्हें किसी अन्य स्थिति में खेलने का मौका नहीं मिलता। तात्पर्य यह कि हाकी के खेल में बहुत थोड़े खिलाड़ी स्वेच्छा से गोलकीपर के स्थान पर खेलना पसन्द करते हैं, यद्यपि गोल को बचाने में गोलकीपर की फुर्ती और सतर्कता का कम महत्व नहीं आंका जाता।

हाकी के खेल में स्थिति (पोजीशन) के अनुसार टीम के खिलाड़ियों को इस प्रकार विभक्त किया जाता है—

(१) गोलकीपर
(२) राइट फुल बैक
(३) लैफ्ट फुल बैक
(४) राइट हाफ बैक
(५) सैन्टर हाफ बैक
(६) राइट हाफ बैक
(७) राइट आउट साइड
(८) राइट इन साइड
(९) सैन्टर फारवर्ड
(१०) लैफ्ट इन साइड
(११) लैफ्ट आउट साइड

गोलकीपर (गोलरक्षक)

हाकी के खेल में गोल कीपर का अपनी महत्वपूर्ण स्थिति के कारण विशिष्ट स्थान होता है। गोल रोकने का अंतिम और महत्वपूर्ण कर्तव्य गोल कीपर का ही होता है। वह प्रतिरक्षा की अंतिम पंक्ति में होता है और उसकी गतिविधियों से मैच हारा अथवा जीता जा सकता है। यही कारण है कि गोल कीपर, टीम का एक मुख्य स्तंभ होता है। सतर्कता, अभ्यास द्वारा अर्जित अनुभव और अपने खेल में प्राप्त कुशलता उसकी योग्यता के मुख्य आधार हैं।

प्रायः गोल कीपर स्तम्भों के मध्य में खड़ा होता है, किन्तु गेंद किस ओर से आ रही है, यह तो वह देखता ही है, साथ ही उसमें यह भांपने की शक्ति भी होनी चाहिए कि गेंद किस कोण से उसके गोल में हिट की जा रही है। अतएव स्थिति के अनुसार उसे कभी-कभी अपना स्थान भी गोल में बदलना पड़ता है। गोल कीपर को हर समय इतना सतर्क रहना पड़ता है कि मौका होने पर वह इधर-उधर दौड़ सके और आवश्यकतानुसार स्टिक से या पैड से अथवा हाथ से गेंद को गोल के अन्दर जाने से रोके। इसके लिए उसमें तुरन्त निर्णय लेने की शक्ति का होना आवश्यक होता है। वह क्षणमात्र में यह निश्चय कर लेता है कि तेजी से आ रही गेंद को अपने स्थान पर ही खड़ा होकर रोके या कुछ आगे बढ़ कर रोके। यदि आक्रमणकारी कोई फारवर्ड अकेला ही तेजी से गेंद लेकर गोल की तरफ झपट रहा है तो गोल कीपर को फुर्ती से वृत्त रेखा के बिलकुल पास पहुंच कर गेंद को काबू में करना पड़ता है या उसे हिट करके बाहर फेंक देना आवश्यक होता है। इससे विपक्षी खिलाड़ी के लिए गोल करने का अवसर और क्षेत्र—दोनों कम हो जाते हैं।

प्रतिरक्षक टीम का अन्तिम सदस्य होने के कारण निर्धारित नियम के अनुसार गोल कीपर को अपने आपको बचाने के लिए पैडों और दस्तानों के अतिरिक्त अपने चेहरे को चोट से बचाने के लिए भी कुछ न कुछ पहनने की छूट है। उसे अपने गोल-क्षेत्र में स्टिक के प्रयोग करने के अतिरिक्त 'किक' मारने की भी अनुमति दी गई है। वैसे गोल कीपर अपनी स्टिक को जितना कम काम में ले, उतना ही अच्छा समझा जाता है। स्टिक का तो वह तभी उपयोग करता है, जब कि उसे यह विश्वास हो कि वह गेंद को गोल-क्षेत्र से बाहर करने में सफल रहेगा, आक्रमणकारी गेंद से दूर हो या गेंद उसके पैर से रुक कर सामने ही गिर गई हो तो फिर वह उसे स्टिक से जोरदार हिट मार कर बाहर फेंक सकता है। गोल कीपर अपने घुटने सामने की ओर झुका कर खड़ा होता है, जिनसे गेंद पैर से टकरा कर दूर जा गिरे, नहीं तो तेजी से बढ़ रहा आक्रमणकारी फारवर्ड तुरन्त ही उसे आसानी से गोल में दाग देगा। इसलिए गोल कीपर को इन सब बातों पर सदैव ध्यान और दृष्टि रखनी आवश्यक होती है।

गोल कीपर को पैड से गेंद रोक कर, उसे गोल क्षेत्र से बाहर फेंकने का अभ्यास भी आवश्यक होता है। गोल कीपर में 'किक' लगाने की योग्यता होना भी उपयोगिता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसीलिए यह समझा जाता है कि एक अच्छा फुटबाल खिलाड़ी, हाकी का अच्छा गोल कीपर बन सकता है। हाकी के गोल कीपर को 'किक' लगाने का अच्छा अभ्यास होना आवश्यक माना गया है।

कई अवसरों पर गोल कीपर को यह निर्णय भी लेना पड़ता है कि वह आती हुई गेंद को रोके या नहीं? यदि वह समझता है कि गेंद गोल रेखा से बाहर जा रही है या यदि वह उसे रोक भी लेता है तो कोई उसका साथी खिलाड़ी वहां पास लेने को है या नहीं—साथ ही यदि वह गेंद रोकने को आगे बढ़ता है, तो गोल स्तम्भों के बीच उसका स्थान लेने को खिलाड़ी वहां मौजूद है या नहीं—ये सब बातें गोल कीपर की सूझबूझ पर निर्भर करती हैं। खेल की क्षण-क्षण में बदलती स्थिति के अनुसार सही पूर्वानुमान, साहस, सतर्कता, तत्क्षण निर्णय-तत्परता और तीक्ष्ण दृष्टि अच्छे और कुशल गोल रक्षण का रहस्य है।

(क्रमशः)

फैण्टम
हनीमून से वापसी
हनीमून के समय डियाना और फैण्टम पर तीन लुटेरों का हमला···
घूंसा
क्रैक !
धड़ाम
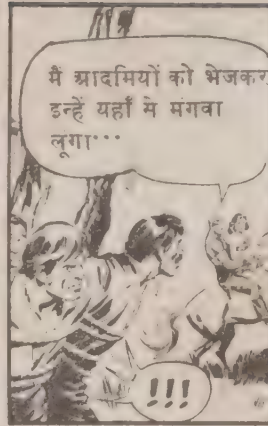
मैं आदमियों को भेजकर इन्हें यहाँ से मंगवा लूंगा···
!!!
उसको पता ही नहीं चला कि मैंने यहाँ पर चाकू छिपा रखा है।
पहले देख लो कि वह जा चुका है या नहीं ?

यह हुई न बात··· अब हम आजाद हैं !
लेकिन वह हमारी बन्दूकें तो ले गया है !
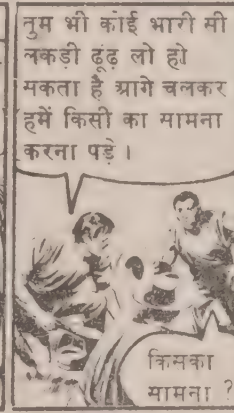
तुम भी कोई भारी सी लकड़ी ढूंढ़ लो हो सकता है आगे चलकर हमें किसी का सामना करना पड़े।
किसका सामना ?

जैसे शेर···या किसी खूंखार जानवर का ! आओ अब चलें !
किस तरफ ?
जिधर वह गया है उसके विपरीत दशा में
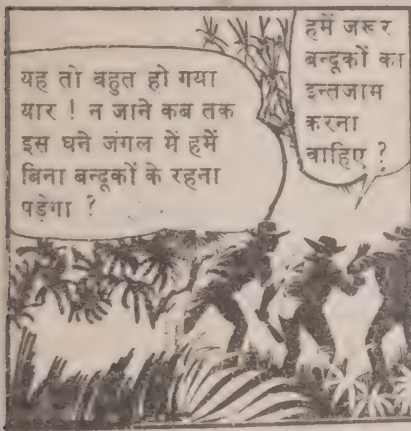
यह तो बहुत हो गया यार ! न जाने कब तक इस घने जंगल में हमें बिना बन्दूकों के रहना पड़ेगा ?
हमें जरूर बन्दूकों का इन्तजाम करना चाहिए ?
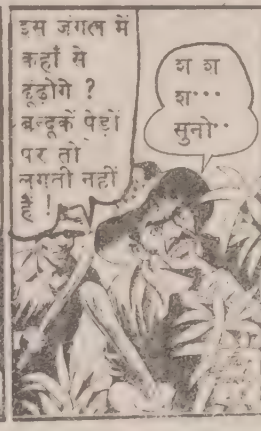
इस जंगल में कहाँ से ढूंढोगे ? बन्दूकें पेड़ों पर तो लगती नहीं है !
श श श··· सुनो··

खाना तैयार है··
ला-डी-डा-डा डी-डा···
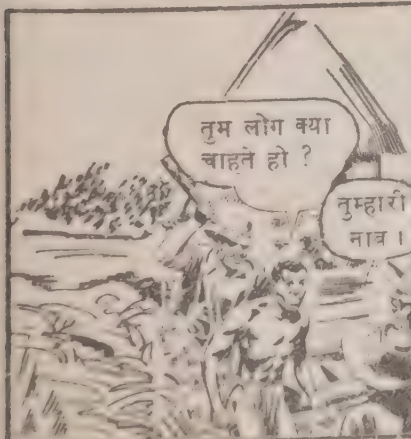
तुम लोग क्या चाहते हो ?
तुम्हारी नाव।

ई ई ई ई !
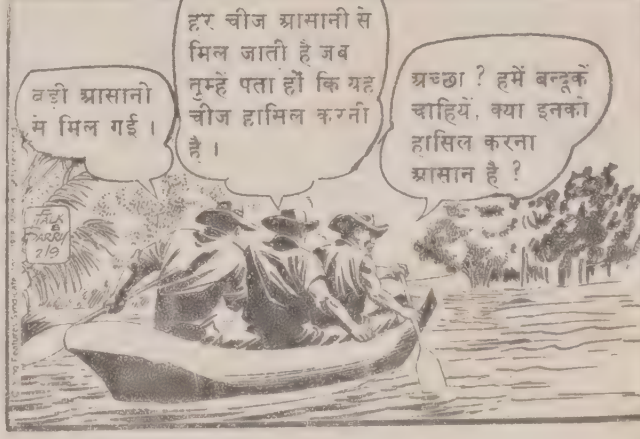
बड़ी आसानी से मिल गई।
हर चीज आसानी से मिल जाती है जब तुम्हें पता हो कि यह चीज हासिल करनी है।
अच्छा ? हमें बन्दूकें चाहियें, क्या इनको हासिल करना आसान है ?
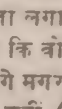
दीवाना वर्ग पहेली १० रु० इनाम जीतिये

बांए से दांए

१. इसके बनने पर पैसों से हाथ धोना पड़ता है। (४)
४. उलट। (३)
६. बनियापन से लिखने की उल्टी सामग्री निकाल कर जीवन का गुजारा चलाइये। (३)
८. इसे लड़ाने पर काम हो जाता है। (३)
९. रेगिस्तान में पहले खून फिर पर्दा। क्या यह सब धोखा है ? (४)

1		2	3	■
	■	4		5
6	7		■	
8			■	
■	9			

ऊपर से नीचे

१. चोट करने वाली इस चीज पर पहले कब्जा करो और फिर मित्र मिलेगा ? (४)
२. टमरीक से खाने की चीज बनाइये।
३. उल्टी आदत। (२)
५. भक्तिन जो शुरू में तीन-चार जैसी है ? (४)
७. दवा जो पीपल के बीज, गेसू की जड़ और मापल की चोटी से बनती है। (३)

अन्तिम तिथि: १६/१२/६८

दीवाना प्रश्न-पहेलियां

अपनी दीवानगी परखिये

१. आजकल पैसा जाता ही जाता है आता क्यों नहीं ?
२. शराब न पीने वाला गाने से क्यों शर्माता है ?
३. बच्चा जन्मते ही रोता है हंसता क्यों नहीं ?
४. ज्यादा बोलने वाले शाकाहारी क्यों नहीं होते हैं ?

उत्तरों का मिलान करके देखिये। जितने उत्तर हमारे दीवाने उत्तरों से मिलें उसे दस से गुणा कीजिये। जो संख्या आयेगी आप उतने ही प्रतिशत दीवाने हैं।

उत्तर —
१ क्योंकि आना अब चलन में नहीं है। (आने पाई वाला आना)।
२ क्योंकि वह बे-सुरा है।
३ क्योंकि पैदा होना कोई हंसी-ठट्ठा नहीं है।
४. क्योंकि वह कान खा जाते हैं।

प्र० : नब्ज क्या होती है तथा इससे हमें क्यों पता चलता है ?

सतीश कुमार आहूजा—दिल्ली

उ० : डाक्टरों द्वारा हर मरीज की नब्ज हमेशा ली जाती है तथा आपकी भी सैंकड़ों बार ली गई होगी। आप स्वयं भी अपनी या किसी दूसरे की नब्ज सरलता से गिन सकते हैं। नब्ज लेते समय डाक्टर या नर्स मरीज को लिटा या बैठा देते हैं। बाँह को आराम की अवस्था में रख कर, हाथ के अंगूठे को ऊपर की ओर कर दिया जाता है, तथा फिर तर्जनी अंगुली को अंगूठे की ओर कलाई पर रख कर नर्स नब्ज की गति सुनती है। इन धड़कनों को एक मिनट तक गिना जाता है। वास्तव में इस धड़कन को कनपटी और गरदन पर भी अनुभव किया जा सकता है। नब्ज को गति से हृदय के धड़कने की गति परिसंचारी तन्त्र में रक्त के दबाव का पता चलता है।

हृदय की गति में थोड़ी-थोड़ी देर बाद एक ठहराव आता है। इस ठहराव के समय अओरटा नाड़ी की दीवार सुकड़ जाती है तथा इस सिकुड़न से हृदय अन्दर का अतिरिक्त रक्त शरीर की रक्त नाड़ियों में भेजा जाता है। ये रक्त परिसंचारी तन्त्र का दौरा करता है। अओरटा का बारी-बारी से फैलना तथा सिकुड़ना या धड़कना सारी नाड़ियों में एक लहर भेजता है। नाड़ियों में ये धड़कन शरीर की किसी भी रक्त नाड़ी में खाल के अन्दर अनुभव की जा सकती है, इसे ही नब्ज कहते हैं।

नब्ज हृदय के सिकुड़ने पर निर्भर है। इस कारण इससे हमें हृदय के धड़कने की गति का पता चलता है। नब्ज की गति शरीर की रक्त आवश्यकता पर निर्भर है। छोटे शरीर बड़ों की अपेक्षा अधिक गर्मी खोते हैं इसलिये इन्हें रक्त की तेज गति की आवश्यकता होती है। यही कारण है छोटी-छोटी चिड़ियों की नब्ज एक मिनट में २०० बार तक चलती है। बिल्लियों की नब्ज १२५ बार, मनुष्य की नब्ज ७५ बार तथा घोड़े की ३५ बार चलती है। इसके विपरीत हाथी की नब्ज एक मिनट में केवल २५ बार ही चलती है।

प्र० : रोबिनहुड की कथायें अक्सर सुनने में आती हैं, रोबिनहुड कौन था ?

महेन्द्र सिंह लालस—जोधपुर

उ० : किसी भी लुटेरे को कोई व्यक्ति भी आदर्श व्यक्ति नहीं मानता। परन्तु रोबिनहुड लुटेरा होते हुए भी औरों से भिन्न था। सब जानते हैं चोरी तथा लूटमार करना बहुत ही बुरा है, फिर भी रोबिनहुड की सराहना की जाती है, क्योंकि वो सदा धनवानों को लूट कर निर्धनों की सहायता करता था।

अनुमान है कि रोबिनहुड बारहवीं शताब्दी में हुए थे तथा चौहदवीं तथा पन्द्रहवीं शताब्दी में इनकी गाथायें सबसे अधिक प्रचलित तथा लोकप्रिय थीं। सन् १५२१ में प्रकाशित इतिहास की एक पुस्तक के अनुसार, रोबिनहुड तथा लिटिल जौन नामक बहुत ही विख्यात डाकू रिचर्ड प्रथम के समय में जंगलों में छुपे रहते थे। इनका लूटने का ढंग बहुत ही निराला था। ये केवल धनवानों को ही लूटते थे जब तक वो इन पर जानलेवा आक्रमण न करे। रोबिनहुड ने इस लूट मार के लिये सौ कुशल निशाने बाज प्रशिक्षित किये हुए थे। ये इतने होशियार थे कि चार सौ व्यक्ति भी इनका सामना करने का साहस नहीं करते थे।

सारा इंगलैंड रोबिन की गाथाओं का गान करता है। रोबिन किसी भी स्त्री को कभी भी कोई भी हानि नहीं पहुंचने देते थे तथा किसी निर्धन से कभी कुछ नहीं लेते थे अपितु उनकी अमीरों से लूटे धन से सदा सहायता ही करते थे। इससे ही अनुमान लगाया जा सकता है कि ऐसे व्यक्ति को लोग कितना चाहते होंगे क्योंकि उस काल में भी सबसे ज्यादा सराहना दुर्बल रक्षा तथा तीरन्दाजी की होती थी। रोबिन ने जनता का मन जीत लिया था और इसी कारण वे एक के बाद एक कथा रोबिन के साथ जोड़ते जाते थे। उन्होंने ही उसे अच्छा खिलाड़ी तथा कुशल तीरन्दाज के अतिरिक्त जंगलों का प्रेमी भी बताया है।

रोबिनहुड के बारे में बहुत सी अन्य कथायें भी हैं इनमें से एक के अनुसार वो सैक्सन थे। तथा वही आखिरी सैक्सन था जिसने इंगलैंड को जीतने वाले नोरमैन्स का मुकाबला किया था। इन कथाओं से ही पता चलता है कि रोबिनहुड वास्तव में ही कोई मानव था परन्तु ये भी निश्चित ही है कि उनके बारे में प्रचलित अधिकतर कथायें कही सुनी कथायें ही हैं।

प्र० : सांपों के पैर क्यों नहीं होते तथा ये पैरों के बिना कैसे चलते हैं ?

राजीव एम० पंजाबी—बल्लबगढ़

उ० : आजकल साँपों के पैर नहीं होते ये ठीक है, परन्तु इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि विकास के दौरान ही इन्होंने अपने पैर खोये हैं। परन्तु इन्होंने अपने पैर किस कारण खोये, इससे विज्ञान अभी तक अनजान है।

साँपों के चलने में इनके शरीर के निचले भाग के शल्क अति सहायक होते हैं। ये शल्क लगभग सभी साँपों के शरीर में होते हैं।

साँपों के चलने के चार भिन्न ढंग होते हैं। पहला साँप अपने शरीर को S की शक्ल में मोड़ लेता है फिर पीछे से आगे को जोर लगा कर धरती के खुरदरे भाग में शल्कों की सहायता से आगे बढ़ता है। दूसरी विधि में अपने शरीर के कुछ हिस्से को शल्कों की सहायता से सिकोड़ता है और फिर आगे के भाग को खींचकर आगे बढ़ता है। सिकुड़े हुए शल्क फैल कर आगे बढ़ने में सहायता करते हैं। तो पीछे के भाग के शल्क शरीर को पीछे खिसकने से रोकते हैं। तीसरी विधि सांप पेड़ों पर चढ़ने में प्रयोग में लाते हैं। इसमें ये अपने पूंछ वाले भाग को पेड़ पर लपेट लेते हैं तथा फिर मुंह वाले भाग को खींच कर ऊपर की किसी टहनी में अटका लेते हैं फिर दुम को खोलकर सारा शरीर ऊपर खींच लेते हैं। अपने शरीर के बगल में मुड़कर भी साँप आगे बढ़ते हैं। शरीर के अगले हिस्से को एक ओर गोलाई में फेंकते हैं तथा पीछे के शरीर को आगे बढ़ाकर दूसरी ओर गोलाई में शरीर फेंक कर इसे आगे बढ़ाते हैं। पैरों के न होने हुए भी इन्हें पृथ्वी पर चलने में कोई कठिनाई नहीं होती तथा इनकी गति भी काफी तेज होती है।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

आपको पता लगता है कि जमाना बदल गया जब...
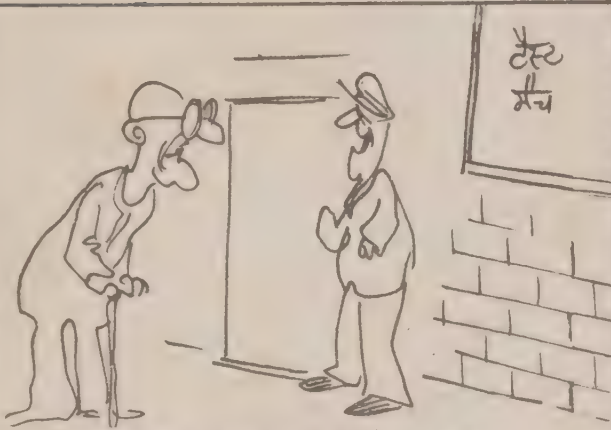
जब आप उस मैदान में पहुंचते हैं जहां बचपन में आप बे-रोक-टोक सारे दिन कंचे और गिल्ली डंडा खेला करते थे तो पता लगता है कि अंदर जाकर बैठने भर के लिये पचास रुपये का टिकट लगेगा।

जब आप मीराबाई नाटक देखने जाते हैं और स्टेज पर मीराबाई, टी शर्ट और जीन्स पहने पॉप सिंगर ऊषा ऊथुप के अंग्रेजी गाने पर ट्विस्ट और जर्क करती दिखाई जाती है।
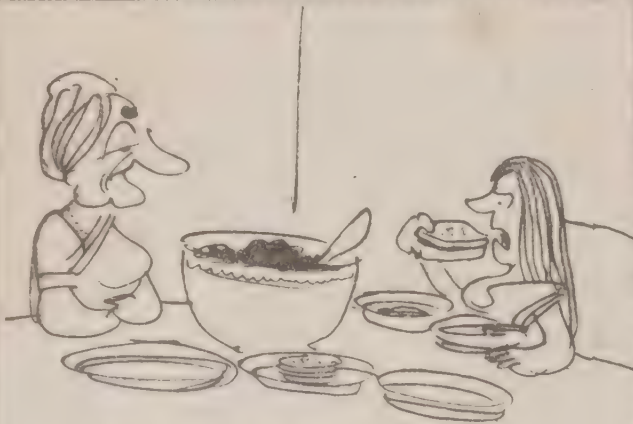
जब आप बड़े चाव से सारा दिन लगा कर सर्दियां आने पर सरसों का साग और मक्की की रोटियां बनाती हैं और घर वाले साग में घी डाल मक्की की रोटी के साथ खाने की बजाय साग की पतली सी तह ब्रैड पर लगा कर सैंडविच बना कर खाते हैं।

जब आप बेटे से तीर्थ यात्रा करने की इच्छा प्रकट करते हैं और वह गोआ, बीच या मसूरी, नैनीताल अथवा शिमला की बुकिंग करा लाता है।

जब आप पोते-पोतियों से अजीब-अजीब नाम सुनती हैं जिनका कोई अर्थ नहीं होता।

जब आप अपनी पोती से ओ३म जय जगदीश सुनने की आशा में प्रार्थना गाने के लिए कहती हैं और पोती 'ट्विंकल ट्विंकल लिटल स्टार' गाना शुरू करती है।
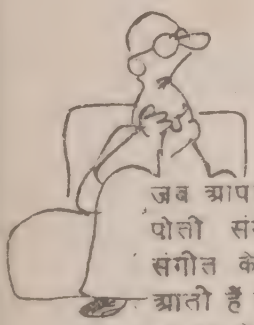
जब आपके पास वाले कमरे में पोते-पोती संगीत का टेप चलाते हैं तो संगीत के नाम ऐसी-ऐसी आवाजें आती हैं जैसी १९४७ के हिन्दू-मुस्लिम फसाद के दिनों में दंगाग्रस्त मुहल्लों में सुनाई पड़ती थीं।
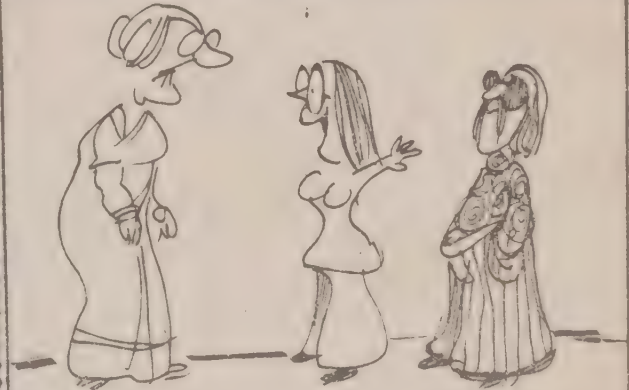
जब आपके बेटे-बहू पोती की शादी की फिक्र कभी नहीं करते। पोती खुद अपने लिए वर ढूंढ़-ढूंढ़ कर घर लाकर आपको दिखाती है।

जब आपकी बहू चरण छूने की बजाय 'हाय डैड' कह कर ग्रीट करती है।

जब आप चौथे स्टैन्डर्ड में पढ़ने वाले अपने पोते की कोर्स की पुस्तकें पढ़ते हैं और आपको सिर टांग का कुछ भी पता नहीं लगता।

गधे से विवाह

राजेन्द्र कुमार राजीव

मालवा की राजधानी उज्जैन में किसी समय एक कुम्हार रहता था। वह कुम्हारों का चौधरी था। उसका नाम भाऊ था। एक रात वह सारे काम से छुट्टी पाकर सोने जा रहा था। अचानक उसने सुना कि कोई बहुत ही मधुर स्वर से गा रहा है। वह झटपट उठा और झोंपड़ी से बाहर हो गया। बाहर आंवे के पास जहां हल्की आंच में कुम्हार के बर्तन पक रहे थे, एक सफेद गधा बैठा हुआ गा रहा था।

गधे को गाते देख भाऊ को बहुत अचम्भा हुआ। ऐसा कोई गायक तो राजा की राजसभा में भी नहीं था। वह उस गधे को पकड़कर अपनी झोंपड़ी में ले आया। उसकी सफेद मुलायम पीठ पर हाथ फेरते हुए उसने पूछा—

'असल में तुम कौन हो भाई ? जब तुम इतना अच्छा गा लेते हो तो बोल भी सकते होगे ! जरा बताओ तो ?'

गधे ने मनुष्य की बोली में कहा—

'अरे भाई, दुर्भाग्य से मुझे यह अशुभ देह मिली है। मैं मनुष्य नहीं, एक गंधर्व हूं। महाराज इन्द्रदेव की सभा का सब से अच्छा गाने वाला गंधर्व हूं, परन्तु इन्द्राणी के अभिशाप से मेरी यह दुर्गती हुई है। एक दिन इन्द्राणी की चादर उड़ गई और यह देखकर मुझे हंसी आ गई। इस पर इन्द्राणी ने गुस्से में कहा—'यों गधे की तरह क्या हंसते हो। जाओ, आज से बारह वर्ष तक गधे ही बने रहोगे।' उन्होंने इस प्रकार मुझे शाप दे डाला। सुनकर मेरे होश उड़ गए और मैंने क्षमा मांगी परन्तु इन्द्राणी ने मुंह फेर लिया। इस पर इन्द्र ने कहा—तुम मेरे प्रिय गायक हो। तुम गधे हो गए, परन्तु तुम्हारी कला तुम्हारे साथ रहेगी और रात के समय तुम मनुष्य के रूप में रह सकोगे !'

'बस, फिर मुझे पृथ्वी पर धकेल दिया गया। इस देह में मैंने दो वर्ष काट दिए हैं। अभी दस वर्ष बाकी हैं। तुम मुझे अपने यहां रख लो। मैं तुम्हारे लिए बहुत ही सुन्दर बर्तन बना दिया करूंगा। कुछ दिनों में ही तुम बहुत धनी हो जाओगे।'

बस, फिर क्या था, भाऊ उसे अपने यहाँ रखने के लिए राजी हो गया। रात के समय वह गधा मनुष्य का रूप धारण कर लेता था और गीत गुनगुनाते हुए कुम्हार के लिए सुन्दर-सुन्दर मिट्टी के बर्तन और खिलौने आदि बनाता रहता था। मटकियों पर वह बहुत बढ़िया फूल-पत्ती बनाता था और बारीक नक्काशी का काम करता था।

उससे कुम्हार बहुत प्रसन्न था। मिट्टी के ऐसे सुन्दर और खिलौने उस नगर में क्या, उस राज्य भर में कोई नहीं बना पाता था। उसके घड़े बड़े-बड़े लोगों के यहां बिकने लगे। धीरे-धीरे राजमहल तक में उसकी चीजों की मांग होने लगी।

राजकुमारी स्वर्ण रेखा ने जब उन रंग-बिरंगे और सुन्दर नक्काशीदार मटकों को देखा तो वह मुग्ध हो गई। खुद राजा को भी ये घड़े बहुत पसन्द आए। राजा ऐसे एक हजार घड़े चाहता था। उसने भाऊ कुम्हार को बुलाया और कहा—

'तुम मुझे ऐसे एक हजार घड़े ला दो। इसके बदले में तुम्हें और तुम्हारे मेहमान को जो चाहोगे, वह मिलेगा !'

भाऊ ने आकर गधे से सब बातें कहीं। गधे ने कहा—

'हां, हां, क्यों नहीं ! एक हजार घड़े मैं बना सकता हूं और इनसे भी अधिक सुन्दर। परन्तु एक शर्त है। इसके बदले में राजकुमारी स्वर्णरेखा के साथ मेरा विवाह कर दिया जाए।'

कुम्हार उसकी बात सुनकर घबराकर बोला।

'अरे ! क्या यह कहते हो ? ऐसी बात मैं राजा से कैसे कह सकता हूं। वह सुनेगा तो मुझे मरवा डालेगा। भला, गधा कहीं राजा का दामाद हो सकता है ! नहीं, तुम्हारी यह बात मैं अपने मुंह से राजा से नहीं कह सकूंगा।'

'नहीं, नहीं, तुम्हें यह सब कहने की जरूरत नहीं होगी। मैं दो घड़ों पर अपना सन्देश लिख दूंगा। तुम आज दोपहर में राजमहल में जाकर एक घड़ा राजा को और दूसरा राजकुमारी को दे देना।' गधे ने कहा।

उसी दिन दोपहर कुम्हार दो घड़े लेकर राजमहल में पहुंचा। उसने एक घड़ा राजा को भेंट कर दिया और दूसरा राजकुमारी को दे दिया। शाम होते-होते कुम्हार की झोंपड़ी के आगे राजकुमारी जयश्री का रथ खड़ा हुआ।

कुम्हार ने अपना भाग्य सराहा, परन्तु उसे डर भी लग रहा था कि जब राजकुमारी उस गधे को देखेगी तो क्या कहेगी। वह डरते-डरते राजकुमारी को गधे के सामने ले गया।

'अच्छा तो यही है वह कलाकार ! किसी कलाकार की ऐसी शक्ल तो मैंने आज तक कभी नहीं देखी थी।'

शेष पृष्ठ पर

मदहोश
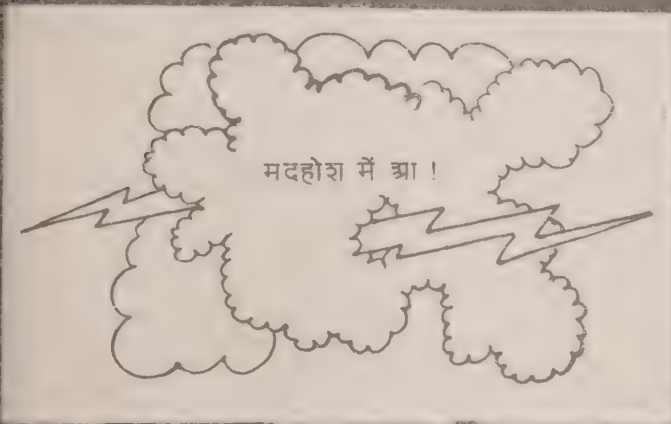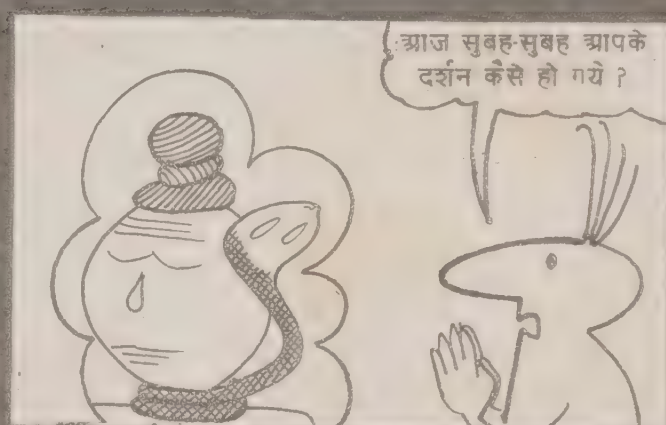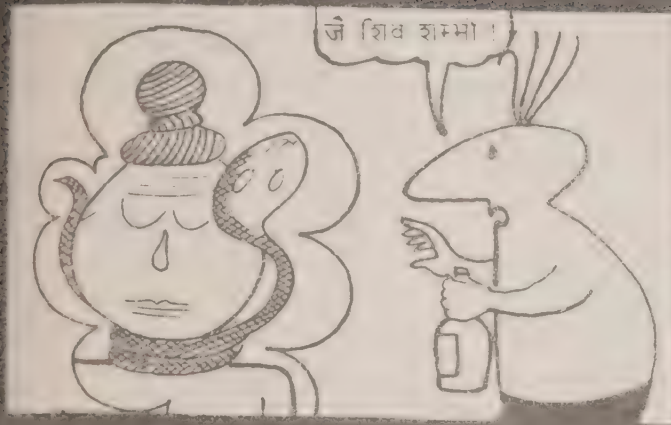
द्धि का ढोल

रामपुर गाँव खूब बडा नहीं छोटा ही है। आज से वर्षों पूर्व वहाँ भीमा
म का एक पहलवान रहता था। उसके
ने गने एवं बाँहों को देख कर लोग अलग
ही सहम जाते थे।

ज सध्या समय वह गाँव के बीच
पर खड़ा हो जाता। है कोई माई
लाल जो हमसे हाथ मिलाले—वह ताल
कर कहता। लोग उसकी ललकार सुनते
र ना में सिर हिला देते। भला भीमा से
कर किसे अपना हाथ पैर-तोडाना था।

उड़ते-उड़ते यह खबर वैशाली ग्राम के
पहलवान के पास पहुँची। सुनते ही
र तेल के बैंगन सा जल उठा। भीमा
की हिम्मत—आज ही उसे छठी का
याद कराना है। पछेड़ मूछों पर ताव
देता रामपुर के लिए रवाना हो गया।
ग से रामपुर वालों को इसकी
... भाई ! भीमा तो कोई

बुरा नहीं, वह तो अपनी पहलवानी का ताल ठोक कर केवल लोगों को हसाया करता है। फिर भीमा सारे रामपुर की रौनक भी तो है चलो भाइयो भीमा को पछेड़ के आने की खबर दे आओ।

गाँव वालों को विदा कर भीमा कुछ सोच ही रहा था कि उसे पछेड़ आता दिखाई दिया। बाप रे ! यह आदमी है या राक्षस, इतना लम्बा शरीर, ऐसे मोटे-मोटे ताड़ से पैर, चलता है तो धरती हिलती है।

अरे ! मुन्ने की माँ, देखो वैशाली ग्राम का पछेड़ पहलवान आ रहा है। मैं तो इस दैत्य से किसी तरह नहीं जीत सकता। तुम एक काम करो, मैं चादर ओढ़ कर सो जाता हूँ, वह आये तो कहना मेरा बेटा सोया है।

पलक झपकते धरती के साथ-साथ पेड़-पौधों को हिलाता हुआ पछेड़ आ पहुँचा।

कहाँ है भीमा उसे बाहर निकालो ?

वह तो शाम को ही बाहर चले गये हैं।

यह चादर ओढ़ कौन सोया है ?

यह हमारा बेटा है। हूँ यह भीमा का बच्चा है—पछेड़ घबरा कर बोला। अच्छा मैं चलता हूँ उससे जै राम जी की कह देना। पछेड़ उलटे पाव वैशाली लौट पडा। रास्ते भर वह सोचता गया, बाप रे ! भीमा का बच्चा इतना बडा है तो भीमा कितना बडा होगा ?

भीमा ने जब गाव वालों से सच्ची बात बतायी तो सबका हँसते-हँसते बुरा हाल था अब तो भीमा नहा रहा किन्तु आज भी राम-नौमी के दिन सारे रामपुर में भीमा की बुद्धि का ढोल बजता है। — प्रेम शीला गुप्ता

परन्तु तभी गधा मनुष्य की बोली में बोला—

'राजकुमारी, किसी की कीमत उसके रूप से नहीं, गुण से आंकी जाती है। जरा तुम एक क्षण के लिए आंखें तो मींचो। मेरा असली रूप यह नहीं है, जो तुम देख रही हो।'

राजकुमारी ने आंखें मींच ली। दूसरे ही क्षण आंखें खोलने पर उसने अपने सामने एक अति सुन्दर राजकुमार को खड़े पाया। ऐसा सुन्दर और मनमोह लेने वाला युवक तो उसने आज तक नहीं देखा था। वह उसे देखती ही रह गई।

इन्द्र की राजसभा का वह श्राप-ग्रस्त गंधर्व इस समय मनुष्य के रूप में था। उसने अपनी सारी कहानी राजकुमारी को बतला दी। फिर वह बोला—'तो राजकुमारी, क्या तुम मुझसे विवाह करोगी ? मुझे अभी नौ वर्ष और इसी प्रकार काटने हैं, फिर मैं तुम्हें अपने साथ इन्द्रपुरी को ले चलूंगा।'

राजकुमारी ने सोचा कि भला मुझे इससे अच्छा पति और कहाँ मिलेगा ! वह राजी हो गई। घर वापस लौटने पर राजकुमारी ने राजा के सामने अपनी इच्छा प्रकट कर दी।

राजकुमारी की इच्छा सुनकर राजा दंग रह गया। उसे लगा कि कहीं राजकुमारी का दिमाग फिर तो नहीं गया है। इतने बड़े राज्य की राज्यकन्या भला एक गधे के साथ विवाह करेगी। यह कैसे हो सकता है। इस बात को जिसने भी सुना उसने आश्चर्य प्रकट किया। परन्तु राजकुमारी अपनी जिद पर अड़ी हुई थी। राजा गुस्से से लाल-पीला हो रहा था। उसने संसार के सुन्दर से सुन्दर राजकुमार को चुनकर विवाह करने का वादा किया। पर राजकुमारी अपनी हठ छोड़ने को तैयार नहीं हुई।

अन्त में विवश होकर राजा को इस विवाह के लिए राजी होना पड़ा और राजकुमारी का विवाह उस सफेद गधे के साथ कर दिया गया। विवाह का दृश्य लोगों ने दांतों-तले उँगली दबाकर देखा। एक ओर बहुमूल्य हीरे-मोती के जेवरों से लदी सुन्दर राजकुमारी और दूसरी तरफ दूल्हे के रूप में एक सफेद गधा।

इस घटना से राजा ने अपना माथा ठोंक लिया। दुःख और निराशा से उसका मन भर आया। राजकाज से वह उदास हो गया। उसने राज्य-शासन का काम एक लोकप्रिय महात्मा को सौंप दिया। वह स्वयं भी राजकाज से उदास होकर एक साधू की भाँति रहने लगा।

इस प्रकार दिन बीतते-बीतते धीरे-धीरे नौ वर्ष बीत गए। यथासमय वह गंधर्व शाप से मुक्त हो गया और उसके वापस देवलोक लौटने का समय निकट आ गया। इस बीच स्वर्ण रेखा को चार पुत्र उत्पन्न हुए थे, जो एक से एक सुन्दर और तेजस्वी थे। आखिर वे देवलोक के एक गंधर्व के पुत्र जो थे।

एक दिन राजा अपनी झोंपड़ी में उदास बैठा था। अचानक उसने देखा कि उसकी पुत्री स्वर्णरेखा एक अत्यन्त रूपवान और तेजस्वी युवक के साथ उसकी तरफ आ रही है। उनके साथ चार छोटे बहुत ही सुन्दर बच्चे भी थे।

वह पुरुष राजा के पास आकर बोला—

'महाराज, अब आप क्रोध त्याग दीजिए। हम लोग यहां से जा रहे हैं, परन्तु जाने से पूर्व आपका आशीर्वाद चाहते हैं। अपनी पुत्री तथा अपने दामाद और नातियों को आशीर्वाद दीजिए महाराज !'

राजा की आंखों में दुःख से आँसू आ गए। बड़ी कठिनाई से वह बोला—

'तुम और मेरे दामाद ! यदि ऐसा होता तो आज मैं इस तरह दुःख और लज्जा के मारे अपनी देह क्यों सुखाता ? मेरा दामाद तो एक गधा है, गधा ! इस मूर्ख लड़की ने अपने पिता की इच्छा का कोई ख्याल न करके एक गधे से विवाह किया। और अब तुम्हारे साथ इसने संसार बसाया है। हे भगवान ! यह दिन भी मुझे देखना था।'

यह कहकर राजा ने अपना मुंह फेर लिया और हाथों से आंखें छिपा लीं। उसने सोचा कि उसकी पुत्री दुश्चरित्र है। पहले तो उसने एक गधे से विवाह किया और अब वह इस व्यक्ति की पत्नी बनकर रहती है। इस लड़की ने अपने चरित्र से इस ऊंचे राजवंश को कलंकित किया है और मेरे मुंह पर कालिख पोत दी है। मारे दुःख और लज्जा के उसका सिर नीचा कर दिया है।

परन्तु वह व्यक्ति राजा से मुस्कराकर बोला—

'महाराज ! आपको असली बात मालूम नहीं है। वह गधा और कोई नहीं ! मैं स्वयं था। मैं देवराज इन्द्र की सभा का सबसे श्रेष्ठ गायक गंधर्व हूं। इन्द्राणी के शाप से मुझे बारह वर्ष का समय गधे की योनि में बिताना पड़ा है, परन्तु रात के समय में मैं मनुष्य का रूप प्राप्त कर लेता था। ये चारों बच्चे मेरे ही हैं। इनमें से दो आपको देता हूं। इन्हें पाल-पोसकर बड़ा कीजिए। ये बड़े वीर और बुद्धिमान निकलेंगे। अब मैं वापस गंधर्व लोक को जा रहा हूं। हमें आशीर्वाद दीजिए।'

यह सब जानकर राजा अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसने अपनी बेटी को गले से लगा लिया। फिर वह अपने नातियों के सिरों पर हाथ फेरने लगा। सबने राजा के पैर छुए। राजा ने जी भर के उन्हें आशीर्वाद दिया।

राजकुमारी स्वर्णरेखा गंधर्व के साथ देवलोक को चली गई। उसके दो पुत्रों का राजा की देख-रेख में पालन-पोषण होने लगा। सचमुच दोनों आगे चलकर बड़े वीर और बुद्धिमान निकले। ★

सवाल यह है ?

इतनी खींचा तानी ! रोटी के लिये !

इतनी मारधाड़ ! रोटी के लिये !

रोटी के लिये ! रोटी के लिये !

या..... रोटी हमें
खा रही है ??

कुछ फिल्म स्टारों के व्यंग्य चित्र

अमोल पालेकर

नीतू सिंह

शबाना आजमी

ज़रीना वहाब

टीना मुनीम

पृष्ठ ११ से आगे
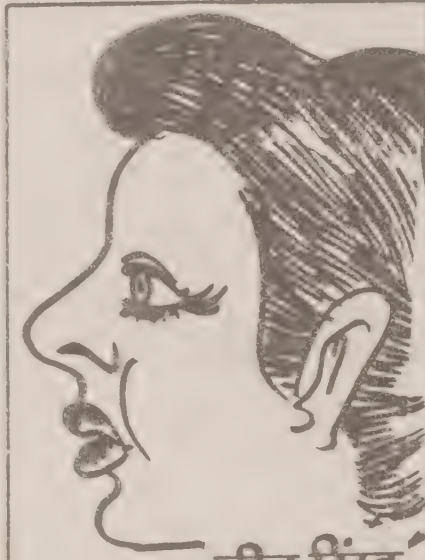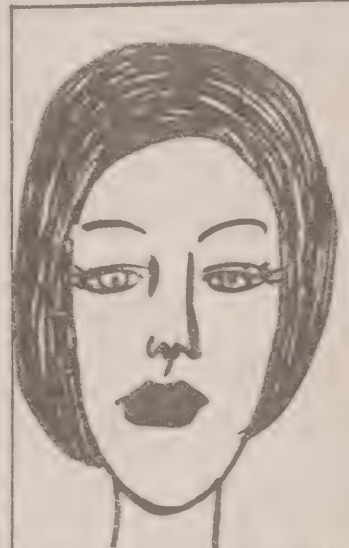
है तो वह सोचता कि आखिर मेंढ़क खाने से क्यों मना किया गया है। उसका जी चाहता कि वह चिरे हुए मेंढ़क को खा जाए। उस कालेज में कृषि-विभाग क्यों नहीं खोला जाता ताकि वहां से अनाज चुराया जा सके। हालांकि चोरी करना बुरी बात है और हजारों लड़के यह क्यों नहीं सोचते कि गोल-गप्पे और चाट खाने से पेट नहीं भरा करता और वे अपने साथ रोटी-सब्जी क्यों नहीं लाते?...और आजकल के जमाने में सिंद-बाद जहाजी क्यों नहीं होते जो लोगों को भरपेट खाना खिलाया करते थे।

एक दिन बड़ी क्लास के लड़के बैठे हुए हंसी-मजाक कर रहे थे। उनमें एक लड़का नेता टाइप का था। उससे पूछा जा रहा था कि अभी हड़ताल क्यों करवाते हो? झगड़ा क्यों करवाते हो? हुल्लड़ क्यों करवाते हो? और उस नेता लड़के ने बड़ी मासूमियत से उत्तर दिया था, 'यार, मैं यह सब तब शुरू करता हूं, जब मैं यह महसूस करने लगता हूं कि मैं दुबला हो रहा हूं। यह सब करने से सरकार मुझे जेल भेज देती है और मैं जेल में खा-खाकर मोटा हो जाता हूं।'

सुशील ने भी यह बात सुनी। जब सब लड़के उठकर चले गए तो उसने नेता टाइप लड़के से चुपके से पूछा, 'सर, क्या कोई ऐसी तरकीब हो सकती है कि मैं भी जेल जा सकूं?'

नेता टाइप के लड़के ने बिगड़कर कहा, 'भाग बे, वरना वह हाथ मारूंगा कि दिमाग हरा हो जायेगा। भाग जा बे!'

सुशील चुपचाप सरक आया।

उसके दिमाग में कुछ चीजें चक्कर लगाया करती थीं। उन्ही बातों को वह हिन्दी और अंग्रेजी में सोचा करता था...तवे पर से उतरी कई गर्मा-गर्म रोटी...कुरकुरी सफेद चित्तियां पड़ी हुई। ऐसी चित्तियां जैसे किसी गोरे चेहरे पर तिल होता है। गर्मा-गर्म भाप उड़ाता हुआ चावल और दाल का प्याला। संसार की सबसे सुन्दर चीज दाल...रोटी...चावल!

यही सब सोचते-सोचते जब बीस दीन बीत गये और क्लास में बैठे हुए लड़के उसे चावल के दाने की तरह दिखाई देने लगे और कमरा चौकोर रोटी जैसा दिखाई देने लगा और जी सनसनाने लगा तो वह लड़खड़ाता हुआ क्लास से निकला। लेकिन कुछ कदम चलकर ही गिर पड़ा।

'एक लड़के ने उसे गिरते हुए देखा तो चीखकर बोला—

'मास्साब! वह सुशील...!'

यह कहते हुए वह क्लास से भागा। उसके पीछे-पीछे सारे लड़के भरभरा कर क्लास से निकल आए। उनमें रंजन भी था।

लड़के सुशील के पास इकट्ठे हो गए। रंजन ने उनके पीछे से घुमकर पूछा—

'क्या हुआ सुशील को?'

'क्या मालूम?' एक लड़का बोला।

रंजन ने उसी वर्ष ग्यारहवीं में एड-मिशन लिया था। वह अन्य लड़कों से अधिक धन-सम्पन्न था। इसलिए कालेज में उसे बड़े सम्मान और आदर से देखा जाता था।

'ठहरो, मैं देखता हूं।'

लड़कों को हटाता हुआ वह सुशील के पास आया। उसने झपटकर उसे बांहों में उठा लिया और धीरे-धीरे एक ओर बढ़ते हुए बोला—

'यारों, इसके घर कहलवा देना। मैं इसे अस्पताल ले जा रहा हूं। मास्टर साहब से भी कह देना और इसकी हाजिरी लगवा देना।'

अपनी कार को पिछली सीट पर सुशील को उसने लिटा दिया और आंधी-तूफान की तरह अस्पताल पहुंच गया।
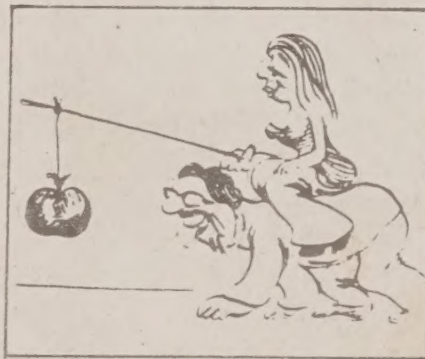
सुशील को अस्पताल में दाखिल कर लिया गया।

दूसरे दिन वह जब अस्पताल पहुंचा तो सुशील से मिलने से पहले डाक्टर के पास चला गया।

'डाक्टर साहब! सुशील कैसा है? उसे क्या-बीमारी थी?'

'सुनो,' डाक्टर ने कहा, 'तुम लोग भले ही नेतागीरी करो, लेकिन इसे नेता मत बनाओ। पन्द्रह साल के तो हैं, लेकिन भूख-हड़ताल किये बैठे हैं।'

'भूख-हड़ताल? लेकिन कालेज में तो इन दिनों इस तरह की कोई बात हो नही रही!'

'अरे!' डाक्टर चौंक उठा। फिर उसकी आंखों में पीड़ा जाग उठी। उसने रंजन की आंखों में देखते हुए कहा, 'हमारे देश में जितनी भूख-हड़तालें होती हैं, शायद उतनी संसार में और कहीं नहीं होतीं। जानते हो, क्यों? यह देश भूखा है। यहां के लोग इतने भले हैं कि अपनी कमजोरी छिपाने के लिए भूखे रहने पर बड़े गर्व से कहते हैं कि हम भूख हड़ताल कर रहे हैं। बस अन्तर केवल इतना है कि जब भरापेट भूख-हड़ताल करता है तो उसका स्वास्थ्य ठीक हो जाता है। लोगों को मालूम भी हो जाता है और उसकी मांग भी पूरी हो जाती है। लेकिन जब देश के हजारों लोग एक-दो वक्त रोज भूख-हड़ताल करते हैं तो उन्हें कागज के टोस्ट पर शब्दों का मक्खन लगाकर खिला दिया जाता है। मुझे लगता है कि यह लड़का भी भूख-हड़ताल की रिहर्सल कर रहा है। वैसे वह ठीक है और एक घंटे बाद डिस्चार्ज कर दिया जायेगा। लेकिन अस्पताल से जाते ही उसे फिर भूख-हड़ताल की रिहर्सल करनी पड़ेगी।'

रंजन ने कुछ नहीं कहा। चुपचाप लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ जनरल वार्ड के पास पहुंच गया, जिस पर सुशील लेटा हुआ था। उसका मुरझाया हुआ चेहरा देखकर कुछ अध-खिला सा दिखने लगा था। उसके चेहरे से ऐसा लगता था जैसे वह भविष्य की कल्पना करके सहम गया हो।

'कैसे हो भाई?'

'ठीक हूं,' सुशील ने त्यौरियां चढ़ाकर कहा।

रंजन हंस पड़ा। फिर बोला—

'तुम्हें चक्कर आ गया था। मैं तुम्हें यहां ले आया था और अब तुम्हें ले जाने के लिए आया हूं।'

सुशील आश्चर्य से उसे देखने लगा। वह रंजन को जानता था कि केवल वही नहीं, सारे कालेज के छात्र उसे जानते हैं। इसलिए नहीं कि वह लखपति है या अमीर बाप का बेटा था और नयी चमचमाती कार में कालेज आया करता था, बल्कि इसलिए कि उसने हाई स्कूल प्रथम श्रेणी में पास किया था। कालेज के हर फंक्शन में भाग लेता था। टेनिस का भी बहुत अच्छा खिलाड़ी था।

अन्य धनी-बाप के बेटों की तरह अलग-अलग नहीं रहता था बल्कि लड़कों में घुलमिलकर रहा करता था इसी कारण सुशील को इस बात पर आश्चर्य नहीं था कि उसने उसके साथ हमदर्दी का व्यवहार किया था। उसे इस बात पर आश्चर्य था कि वह यहां क्यों लाया है ?'

'क्या सोच रहे हो ?' रंजन ने उसकी ओर देखते हुए मुस्कराकर कहा, 'उठो, चलो चलें।'

'कहां ?'

'मेरे घर और कहां ?'

'आपके घर ?' सुशील की त्यौरियां चढ़ गयीं। 'मैं अपने घर जाऊंगा।'

'आज से मेरा घर ही तुम्हारा घर है।' रंजन ने कहा। फिर सुशील के कंधों पर बड़े प्यार से हाथ रखकर बोला, 'मेरा कोई भाई नहीं है। तुम मेरे साथ ही रहना।'

सुशील उसी दिन रंजन के घर चला आया। इसके बाद वे दोनों साथ-साथ ही रहते। सुशील के कपड़े अब साफ-सुथरे रहने लगे थे। रंजन तो चाहता था कि सुशील टिप-टॉप रहे लेकिन सुशील चाहता था कि उस पर रंजन का कम से कम खर्च हो। वह रंजन का बहुत-सा काम कर देता और जब रंजन उसे डांटता तो कहा करता—

'आप मेरे उस्ताद भी तो हैं। मुझे पढ़ाते भी हैं। इसलिए मुझे आपका काम करना ही चाहिए।'

रंजन यह सुनकर मुस्कराकर रह जाता था।

रंजन के घर में उसके बीमार पिता, मां तथा रंजन की दो बहनें, सीमा और रजनी भी रहती थीं। सुशील महसूस करता था कि सब लोग उसे अपने परिवार का एक सदस्य ही समझते हैं।

वह रंजन से धीरे-धीरे अत्यधिक प्रभावित होता गया। रंजन न सिगरेट पीता था, न पान खाता था। न उसे सिनेमा से दिलचस्पी थी और न वह ताश खेलता था। बस घर से कालेज और कालेज से घर या फिर कभी-कभी उस गांव से जहां उसका फार्म था।

जिस साल सुशील ने हाई स्कूल पास किया। रंजन ने इंटर पास किया। रंजन का सैकेण्ड डिवीजन आया था। लेकिन सुशील के पास होने की खुशी में उसने दोस्तों को दावतें दीं।

जब सुशील फर्स्ट-ईयर में आया, रंजन के पिता का देहान्त हो गया और उसी वर्ष सुशील ने मधु को पहली बार देखा।

संतरी टहल रहा था—

और सुशील के हाथों में रंजन का वह छोटा-सा फोटो था जो बढ़ते-बढ़ते पूरे कमरे में छा गया था और अब इस तरह घटने लगा था जैसे बाढ़ का पानी घटता है। इस फोटो ने जैसे आंसू पी डाले थे। भावनाओं का दलदल और यादों के झोंके···"रंजन···रंजन···!'

फोटो को दोनों हाथों में लेकर वह बड़बड़ाता रहा।

'मैं तुम्हें कुछ न दे सका यार। मेरे पास था ही क्या ? और जो कुछ था, उसे तुमने आंका नहीं। आज जिन्दगी की आखिरी सांस भी डूबने वाली है। मुझसे यह मेरे दिल की जलन कह रही है कि अगर आज मुझे स्वर मिल जाए तो मन के टूटे साज पर कोई ऐसा गीत छेड़ूं जो मुझे यह अहसास दिला सके कि मैंने तुम्हारे लिए कुछ किया है। पहले मैंने सोचा था लेकिन लगता है. तुम मुझ पर फिर अहसान कर रहे हो। इतना बड़ा अहसान जो कभी कोई नहीं कर सकता। यह तो आसान है कि प्रेम की राह में दोस्त के लिये अपने प्रेमी का त्याग कर दिया जाए, लेकिन यह कठिन है कि दोस्ती के लिए कोई प्रेम को अपने ऊपर लाद ले। बड़ी नाज़ुक-सी बात है। मैं जानता हूं रंजन भाई। तुम कल्पना से प्रेम करते हो। कल्पना जिसे मेरी भविष्य की आंखों ने तुम्हारे गले में बांहें डाले तुम्हारी पत्नी और अपनी भाभी के रूप में देखा है।

कहीं ऐसा न हो कि तुम मेरी मधु को, मेरे जीवन की पहली और अन्तिम बहिन को भूल जाओ। और अगर न भी भूलो तो उसके साथ वह व्यवहार न करो जो गोरी सरकार भारतवासियों के साथ किया करती थी। मधु, मैं तुम्हें इस दशा में देखना नहीं चाहता लेकिन विश्वास रखो, रंजन भाई ऐसा नहीं करेंगे। क्योंकि वह मुझे बहुत चाहते हैं। वह कल्पना के साथ विवाह नहीं कर सकते।

सोचते-सोचते वह मुस्करा उठा। फिर उसने चौंककर चारों ओर नजरें दौड़ायीं। जैसे उसे मुस्कराते हुए किसी ने देख तो नहीं लिया। फिर वह संतरी की ओर देखकर आगे बढ़कर बोला—

'दोस्त ! एक बज गया ?'

'नहीं ?'

'इसका मतलब है, कुछ घंटे और जीना है। लाओ एक नजर मधु का फोटो भी देख लूं। इस समय वह दुल्हिन बन ही चुकी होगी। बकवास है। औरत जब दुल्हिन बनती है तो बिल्कुल ही अहमक मालूम होती है—लाल-लाल होंठ, जैसे कबूतर को कच्चा चबाकर आयी हो···कबूतर···शिकार···होंठ···हटाओ मैं कुछ नहीं सोचना चाहता। लाओ, फोटो दे दो मुझे।'

संतरी ने आश्चर्य से सुशील की ओर देखा और फिर जेब से फोटो निकालकर उसकी ओर बढ़ा दिया।

सुशील ने फोटो ले लिया। उसे देखता रहा। फिर उसे ऐसा लगने लगा जैसे यह कोई नर्तकी है जो सो रही हो और धीरे-धीरे जाग रही हो और धीरे-धीरे उठ रही हो फिर वह फोटो जैसे प्राणवान हो उठी। ऐसे लगा जैसे वह नृत्य कर रही हो। फिर जैसे मधु फोटो में से बाहर निकल आयी। उसने विचित्र नजरों से सुशील को देखा। और आज से नौ वर्ष पहले का दृश्य सुशील की नजरों में घूम गया। क्रमशः
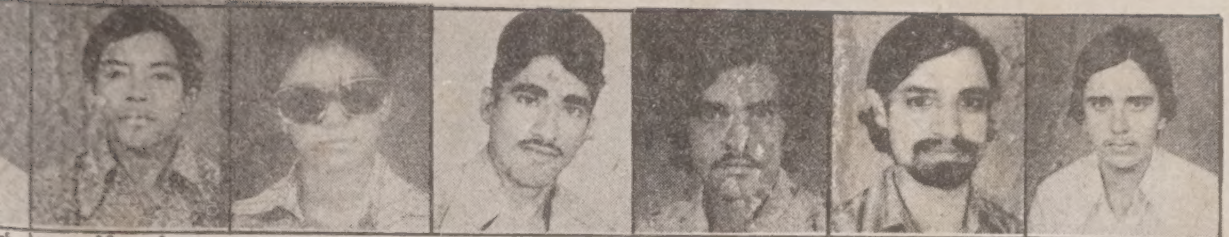
प्रशान्त हरीबिलास जो लड्ठा, बम्बई कालबां देवी के पास (नवल), १६ वर्ष, घोड़े की सवारी करना, स्कूटर चलाना, दौड़ लगाना।

मधुसूदन कुमार नाचानी, बगहा, पो० बगहा, जिला पश्चिम चम्पारन, १३ वर्ष, मोटर साईकिल चलाना, फिल्में देखना।

बद्री नारायण महारण, गांव व पोस्ट ढीगावाली जाटान, जिला श्रीगंगानगर (राज०), २० वर्ष, अमिताभ बच्चन की फिल्म देखना।

प्रभात कुमार यादव, ८१, महात्मा गांधी मार्ग, नगर पालिका, एटा (उ० प्र०), २० वर्ष, वैदिक साहित्य पढ़ना, टमाटर खाना।

भारत भूषण 'जिन्दल' चौक नम्बर, १ जैंतो (पंजाब), २१ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, पत्रिकायें पढ़ना, रेडियो सुनना व उर्दू पढ़ना।

मोहम्मद शुऐब खाँ द्वारा मोहम्मद हनीफ खाँ शाहबाद गेट, रामपुर (यू० पी०), १८ वर्ष, पढ़ाई करना, पतंग उड़ाना।

शंकर मान श्रेष्ठ, नारायण गढ़, मीना बाजार (चितवन), १५ वर्ष, फुटबाल खेलना, दोस्ती करना, आपस में लड़ाई करवाना और तमाशा देखना।

मोहन कुमार मिश्रा द्वारा एल० एन० मिश्रा, देशबन्धु पाड़ा, सिलिगुड़ी, जिला दार्जिलिंग, २० वर्ष, जासूसी करना पत्र-मित्रता।

कपिलराज कर्निकार, नारायण पुतली बाजार, (चितवन), १८ वर्ष, फिल्मी किताब संकलन करना, दुनिया की सैर करना।

रवि कुमार शर्मा, २८४/१३ के०, पांडव रोड, शाहदरा, दिल्ली-३०, १५ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, पढ़ाई की तरफ ध्यान देना।

राजेश्वर प्रसाद, बड़ा बाजार, (वैग शॉप) तिनसुकिया (असम), १६ वर्ष, दिल लगाना, रेडियो सुनना और पत्रिका पढ़ना।

कृष्ण कपूर, ३१३/६८ तुलसी नगर, दिल्ली-३५ १८ वर्ष, प्रतियोगिताओं में भाग लेना, चित्रकारी करना, घूमना-फिरना।

राजेन्द्र कुमार, १-सुख सागर वाकोला पाइप लाइन, बम्बई-५५, २० वर्ष, लड़कों में पत्र-मित्रता करना, डाक टिकट संग्रह।

कमल कान्त जैन, एफ० १२/२ माडल टाउन, दिल्ली, १६ वर्ष, दूसरों को हसाते रहना, पत्र-मित्रता करना, सेहत बनाना।

सेवा सिंह धजल, पो० राज-गगपुर, ८/७५, ओ० सी० एल० डीस्ट-सुन्दर गढ़ उड़ीसा, १६ वर्ष, रेडियो सुनना, मोटर साईकिल चलाना।

चरनजीत, ६८०२ गली जमीर नवाब गंज पुल बंगश, दिल्ली, २३ वर्ष, पुराने शास्त्रीय संगीत सुनना, प्रौढ़ शिक्षा का सुधार करना।

राधेश्याम बेताल 'दीवाना', सतरा मार्केट रोड, बजरिया चौक नागपुर, २२ वर्ष, पत्र-मित्रता, मूर्खों में विचार-विमर्श करना।

राकेश कुमार तिवारी, २७ हाथीपाला चोराहा इन्दौर १७ वर्ष, पढ़ना, खिलाड़ियों के फोटो संग्रह करना, पत्र मित्रता करना।

शम्भू नाथ गोस्वामी, कंन्दुआ बाजार, १६ वर्ष, फिल्म देखना, दोस्तों की शादी में रास करना, ताश खेलना आराम से रहना।

इमतेयाज अहमद (प्यारे) मकान नम्बर ८, मौ० शफी इलाहाबाद, १८ वर्ष, कहानियां लिखना, टाइपिंग करना और सबका ध्यान रखना।

पन्नालाल जैन, महावीर मेटल हाउस आरकाट श्रीनिवासा सार स्ट्रीट बंगलौर, १६ वर्ष, शतरंज खेलना, पत्र मित्रता करना।

पुष्पेन्द्र कुमार शर्मा, ८/१८६३ कूचा पातीराम, बाजार सीताराम, दिल्ली, सच्चाई व काम करना, सच्ची मित्रता करना पढ़ना।

सुरेश गुप्ता, ४५ माडल टाउन पठानकोट, २० वर्ष, बैडमिन्टन खेलना, उपहार आदान-प्रदान करना, पत्र-मित्रता करना।

रवीन्द्र कुमार सिंह, सिनेमा रोड, पो० हासीपुर, जिला वैशाली, फिल्म देखना, घूमना, फैशन करना, दोस्ती निभाना और रेडियो सुनना।

मोहम्मद अनवर खान, आजमी बाड़ीन कुर्ला बम्बई, १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना, पत्र-मित्रता करना, पढ़ना और साईकिल चलाना।

मुरारी लाल गोयल, महालक्ष्मी फ्लावर मिल दुर्गापुर, १५ वर्ष, गाना गाना, रेडियो सुनना, टी० वी० पर प्रोग्राम सुनना।

प्रमोद कुमार सिहारिया पोस्ट बाक्स नम्बर ११४६४, कलकत्ता-सी० २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, डाक टिकट संग्रह।

रमेश कुमार चड्ढा, १३ श्रीनगर कालोनी, वजीरपुर रोड दिल्ली, १६ वर्ष, पढ़ाई करना, क्रिकेट खेलना दौड़ लगाना।

दीवाना फ्रेंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। लिफाफे के कोने पर 'पेन फ्रेंड' लिखना व फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

...स प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

३० नवम्बर से ६ दिसम्बर ७८ तक

मेष : यह सप्ताह आपके लिए पर्याप्त अच्छा रहेगा, परिश्रम करने पर कुछ बिगड़े काम बन सकेंगे, व्यापारिक क्षेत्र में भी सुधार होगा, लाभ बढ़ने लगेगा, मनोरंजन आदि पर व्यय काफी होगा।

वृष : नई योजनाएं आरम्भ करने के लिए यह सप्ताह अच्छा रहेगा, स्थाई साधनों से धन लाभ होता रहेगा, व्यापार में नवीनता एवं उन्नति होगी, कोई एक अप्रिय घटना सम्भव है।

मिथुन : यह सप्ताह पर्याप्त अच्छा है, विगत समय में किए कामों के सुपरिणाम मिलने लगेंगे, साहस शक्ति बढ़ेगी और कामों में दिलचस्पी रहेगी, एवं धन की प्राप्ति में कोई विशेष काम पूरा हो जायेगा।

कर्क : सफलता के मार्ग में बाधाएं आयेंगी, सुस्ती या थकावट का प्रभाव रहेगा फिर भी हालात पूर्णतः आपके वश में रहेंगे, वातावरण भी सुधरेगा, कामकाज पहले जैसा ही और लाभ बढ़ेगा।

सिंह : आर्थिक तंगी बन सकती है फिर भी आपके काम रुकेंगे नहीं पूरे होते रहेंगे, परन्तु जल्दबाजी या क्रोध में कोई भी निर्णय न लें वरना हानि होगी, यात्रा में व्यर्थ का व्यय भी होगा।

कन्या : यह सप्ताह भी प्रायः पहले जैसा ही है, फिर भी इन दिनों आप हालात में काफी सुधार होता महसूस करेंगे, कारोबार ठीक चलेगा, सफलता मिलती रहेगी, घरेलु खर्चों से चित्त परेशान रहेगा।

तुला : यह सप्ताह संघर्षमय भी है और दिलचस्प भी, चल रहे कामों में सुधार व उन्नति, कामकाज में व्यस्तता बढ़ेगी परन्तु लाभ कुछ देरी से मिलेगा, व्यय अधिक और अचानक होगा।

वृश्चिक : यह सप्ताह पिछले दिनों की अपेक्षा अच्छा रहेगा, कुछ गम्भीर समस्याएं दूर हो जायेंगी, परिश्रम काफी करना होगा, आय व्यय समान ही, मित्रों से सहयोग भी मिलता रहेगा।

धनु : सफलता प्राप्त करने के लिए इन दिनों आपको काफी संघर्ष करना पड़ेगा, मानसिक एवं घरेलू परेशानी बनी रहेगी, कामकाज में रुचि कम फिर भी आर्थिक लाभ अच्छा होता रहेगा।

मकर : नई योजना आरम्भ होने के लिए सप्ताह अच्छा है, अफसरों से मेल-जोल, सरकारी एवं सम्पत्ति आदि के कामों से सफलता, संघर्ष भी काफी रहेगा, विरोधी मुंह की खायेंगे।

कुम्भ : किसी विशेष समस्या से छुटकारा मिलेगा और कामों में भी सफलता मिलने लगेगी, कामकाज में सुधार होगा, नातेदारों की ओर से परेशानी, यात्रा भी अचानक करनी पड़ेगी।

मीन : कुसंगति से सावधान रहें, कोई झूठा आरोप भी लग सकता है, परेशानी बढ़ेगी फिर भी भाग्य साथ देगा, मित्रों के सहयोग एवं परिश्रम करने पर हालात आपके नियंत्रण में रहेंगे।

अपने चाहने वालों को चाहने वाली, नवोदित अभिनेत्री।

तमन्ना

—विजय भारद्वाज

इकहरे बदन की मध्यम कद की बड़ी-बड़ी आंखों वाली तमन्ना का नाम आज की चर्चित नवोदित अभिनेत्रियों में लिया जाता है। फिल्म उद्योग में एक लम्बे समय तक संघर्ष करने के बाद तमन्ना की फिल्मों में काम करने की अपनी तमन्ना पूरी हुई। आज तमन्ना के पास लगभग छोटे बड़े बैनर की छः सात फिल्में हैं।

पिछले दिनों 'नवाब साहब' के प्रदर्शन के बाद ही तमन्ना का नाम बड़ी जोर शोर से लिया जाने लगा था। कोई तमन्ना के अभिनय की तारीफ करता, कोई उसके सुन्दर चेहरे की। कोई तमन्ना को सैक्सी नजर से देखकर आह भरता और कहीं कोई उसमें भारतीय नारी की छाप देखता। सामान्य कद, गोरा रंग, कजरारी आंखें, सुन्दर नाक नक्श सभी कुछ इनमें मौजूद है, जो एक अभिनेत्री बनने के लिए आवश्यक होते हैं। इतना कुछ होने के बावजूद भी इनमें अभिनय क्षमता का अपार भण्डार है। अब तक यह साबित कर चुकी हैं कि अगर किसी फिल्म में इन्हें नायिका का रोल दिया जाये तो यह निराश नहीं करेंगी और पूरी लग्न मेहनत से कार्यशील होकर फिल्म को सफल बनाने में जी जान लड़ा देंगी।

नवोदित अभिनेत्रियाँ अधिकतर 'काप-रेटिव' होती हैं लेकिन थोड़ी सी ही सफलता के बाद उनके दिमाग सातवें आसमान पर चढ़ जाते हैं। यह बात तमन्ना के साथ बिल्कुल नहीं है। वह गम्भीरता से हर पर सोच विचार करती हैं और निर्णय लेती हैं।

आज तमन्ना फिल्म उद्योग में हैं। उन्हें सबसे ज्यादा ध्यान अपने प्र का रहता है जो उन्हें समय-समय पर पत्र द्वारा उनके अभिनय के उतार- और कमियों के बारे में अवगत रहते हैं।

किसी भी कलाकार को सफलता दि में फिल्म दर्शकों का ही हाथ होता है कोई कलाकार फिल्म दर्शकों का मन ले तो कोई कारण ही नहीं कि वह ना हो।

भोजन में तमन्ना को बिरयानी तन्दूरी मुर्गा के अलावा, मटर पनीर पसन्द है। वह स्वयं पका कर खाने में विश्वास रखती हैं।

रोमांसों की अफवाहों से दूर भी तमन्ना की यह तमन्ना है कि एक वह अपनी पसन्द के दूल्हे के संग उस चली जायेगी। लेकिन फिलहाल करने का उनका कोई इरादा नहीं है तक कि वह अभिनय क्षेत्र में अपना नहीं मनवा लेंगी, विवाह नहीं करेंगी दिन दूर नहीं जब दर्शकों की जुबा इनका नाम होगा। तमन्ना से हस युक्त फोटो मंगवाना चाहें तो वह के इस फीचर का जिक्र अवश्य करें उन्हें निराशा हाथ न लगे।

तमन्ना का पता है—

कृष्णा एपार्टमैंटस, आठवां
फ्लैट नं० ४५, जुहू
अन्धेरी (प०) बम्बई-४००

आशा पारेख फिल्म "बदला और बलिदान"